वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 77 बुधवार 26 अगस्त 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

मुख्यमंत्री ने की हरियालो राजस्थान अभियान की समीक्षा

रक्षाबंधन पर भाई-बहन के नाम एक पेड़ लगाएं: भजनलाल

प्रदेशभर में अब तक लगे 7 करोड़ 58 लाख से अधिक पौधे

10 करोड़ से अधिक पौधारोपण का लक्ष्य

जयपुर. शाबाश इंडिया

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि हरियालो राजस्थान अभियान के तहत इस वर्ष भी 10 करोड़ से अधिक पौधे लगाए जाएं। उन्होंने विभागों को निर्देशित करते हुए कहा कि समन्वय के साथ पौधे लगाएं एवं उनकी उचित देखभाल भी की जाए। साथ ही, उन्होंने लापरवाही बरतने वाले कार्मिकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई के निर्देश भी दिए। मुख्यमंत्री ने हरियालो राजस्थान अभियान की समीक्षा की। इस दौरान बताया गया कि अब तक 7 करोड़ 58 लाख से अधिक पौधारोपण किया जा चुका है। मुख्यमंत्री ने निर्देश देते हुए कहा कि आमजन को भी त्योहारों के अवसर पर पौधारोपण के लिए प्रेरित किया जाए। उन्होंने आमजन से रक्षाबंधन के अवसर पर एक पेड़ भाई-बहन के नाम पर लगाने का आह्वान भी किया। उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन पर पौधारोपण करने वाले भाई-बहनों को सम्मानित भी किया जाए। बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव जल संसाधन अभय कुमार, अतिरिक्त मुख्य सचिव (मुख्यमंत्री कार्यालय) अखिल अरोड़ा, अतिरिक्त मुख्य सचिव वन एवं पर्यावरण आनंद कुमार सहित संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित रहे। वहीं, अतिरिक्त मुख्य सचिव स्कूल शिक्षा राजेश कुमार यादव, शासन सचिव ग्रामीण विकास कृष्ण कुणाल सहित विभिन्न अधिकारी वीसी के माध्यम से जुड़े।

यमुना जल परियोजना के क्रियान्वयन में बड़ी उपलब्धि

राजस्थान के लिए महत्वाकांक्षी यमुना जल परियोजना के क्रियान्वयन की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। परियोजना की डीपीआर के लिए आवश्यक हाइड्रोलॉजी एवं अंतरराज्यीय स्वीकृतियां जारी हो चुकी हैं। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की अध्यक्षता में यमुना जल परियोजना की प्रगति की समीक्षा बैठक में यह जानकारी दी गई। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह राजस्थान के लिए बड़ी उपलब्धि और प्रदेश के जल संसाधन विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इससे परियोजना के विभिन्न निर्माण कार्यों को गति मिलने के साथ ही राजस्थान में यमुना जल की उपलब्धता सुनिश्चित करने की दिशा में राज्य सरकार के प्रयासों को और मजबूती मिलेगी। बैठक में बताया गया कि 21 अगस्त, 2026 को नई दिल्ली स्थित केन्द्रीय जल आयोग में यमुना जल परियोजना की डीपीआर की विस्तृत समीक्षा की गई। मुख्यमंत्री ने परियोजना के कंसल्टेंट नेबकॉन के विशेषज्ञों एवं विभागीय अधिकारियों को निरंतर समन्वय कर डीपीआर के अनुमोदन की प्रक्रिया को तेजी से बढ़ाने के निर्देश दिए। अतिरिक्त मुख्य सचिव जल संसाधन अभय कुमार ने बताया कि परियोजना के लिए हॉसियावास (चूरू) में प्रस्तावित तीन जलाशयों में से धनोटी जलाशय की निविदा जारी की जा चुकी है तथा इसकी तकनीकी निविदा 27 अगस्त को खोली जाएगी। मुख्यमंत्री ने प्रक्रिया को निर्धारित समय में पूरा करने एवं 29 जून, 2026 को हुए एमओए के अनुसार एसपीवी के गठन के लिए प्रस्ताव शीघ्र प्रस्तुत करने के निर्देश दिए।

डिजिटल आत्मनिर्भरता को भी वैश्विक पहचान दिलाई

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने मंगलवार को यूपीआई को लेकर सोशल मीडिया के माध्यम से बड़ी बात कही है। उन्होंने मंगलवार को एक्स के माध्यम से कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में वर्ष 2016 में शुरू हुआ यूपीआई आज करोड़ों भारतीयों के विश्वास से विश्व के सबसे बड़े रियल टाईम डिजीटल के रूप में स्थापित हो चुका है। इस डिजिटल क्रांति ने भुगतान को सरल और सुगम बनाने के साथ भारत के तकनीकी सामर्थ्य और डिजिटल आत्मनिर्भरता को भी वैश्विक पहचान दिलाई है।

हमारी सरकार प्रदेश में मजबूत कनेक्टिविटी का विस्तार कर रही है

वहीं इससे पहले भजनलाल ने एक अन्य पोस्ट के माध्यम से कहा कि राजस्थान का कोई भी गांव, ढाणी या शहर विकास की मुख्यधारा से अछूता न रहे, इसी संकल्प के साथ हमारी सरकार प्रदेश में मजबूत कनेक्टिविटी का विस्तार कर रही है। 35,107 .81 करोड़ रुपए से अधिक की लागत से प्रदेश के सभी जिलों के गांवों, ढाणियों और शहरों को पक्की सड़कों से जोड़ने का कार्य तेजी से जारी है। ये सड़कें आवागमन को सुगम बनाने के साथ गांवों को शहरों से, किसानों को बाजारों से और युवाओं को रोजगार एवं नए अवसरों से जोड़ने का सशक्त माध्यम बनेगी।

श्री वीर सेवक मंडल का सम्मान समारोह एवं गोठ हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया। एक शतक से अधिक पुरानी स्वयंसेवी संस्था श्री वीर सेवक मंडल, जयपुर द्वारा आयोजित सम्मान समारोह एवं मंडल के सदस्यों तथा उनके परिवारजनों की सामूहिक गोठ रविवार को संघी जी की नसिया, आगरा रोड पर हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुई। मंडल के अध्यक्ष महेश काला एवं मंत्री भानु छाबड़ा ने बताया कि गोठ संयोजक योगेश टोडरका के नेतृत्व में आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम की शुरूआत शनिवार रात भजन संध्या के साथ हुई। रविवार दोपहर खेलकूद संयोजक प्रदीप गोधा के नेतृत्व में सदस्यों एवं परिवारजनों के लिए पुरुष एवं महिला वर्ग में कुर्सी दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके पश्चात सम्मान समारोह आयोजित हुआ। मंडल के संयुक्त मंत्री सुरेश भोंच ने बताया कि सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि प्रमुख समाजसेवी दीपक-पायल बिलाला रहे, जबकि समारोह की अध्यक्षता समाजसेवी विपिन-प्रियंका काला ने की। समारोह में दीप प्रज्वलन समाजसेवी राकेश-स्वाति नेकीवाला ने किया। समारोह में गत कई वर्षों से मंडल द्वारा प्रदान की जा रही

स्वयंसेवी सेवाओं में सक्रियता से अपनी उल्लेखनीय सेवाएं देने वाले दो स्वयंसेवकों अशोक पाटोदी एवं प्रदीप ठोलिया का अतिथियों द्वारा सम्मान किया गया। गोठ संयोजक योगेश टोडरका ने बताया कि समारोह में नरेश कुमार सेठी, सुधांशु कासलीवाल, हेमंत सोगानी, राजकुमार कोठारी, अशोक चांदवाड़, अनिल दीवान, सुभाषचंद जौहरी, शैलेन्द्र गोधा, आलोक जैन, रुपिन काला, अशोक नेता, विजय टोंग्या, राजेंद्र के. शेखर, एडवोकेट सुधीर जैन, सुभाष पाण्डया, दर्शन जैन, राकेश छाबड़ा, शरद बाकलीवाल, महेश बाकलीवाल, नरेश कासलीवाल, अखिलेश गंगवाल, अरुण कोडीवाल, मितेश ठोलिया, सिद्धार्थ जैन, डॉ. विनोद शाह, कैलाश चंद गोधा, बाबूलाल बाकलीवाल, पूनम बाकलीवाल, रमेश वैद, ओम बडजात्या सहित बड़ी संख्या में मंडल के स्वयंसेवक एवं परिवारजन उपस्थित थे। मंच संचालन योगेश टोडरका ने किया। अंत में मंत्री भानु छाबड़ा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। सम्मान समारोह के पश्चात सभी ने चूरमा-दाल-बाटी के सामूहिक भोजन का आनंद लिया। सायंकाल सामूहिक आरती के पश्चात दो दिवसीय कार्यक्रम का समापन हुआ।

सुबोध पब्लिक स्कूल में भव्य अंतर-विद्यालयी उत्सव का आयोजन

''युवा स्वर, विराट दृष्टि : हम सपने देखते हैं, हम उन्हें साकार करते हैं''

जयपुर. शाबाश इंडिया। सुबोध पब्लिक स्कूल, नियर एयरपोर्ट, सांगानेर में ''युवा स्वर, विराट दृष्टि : हम सपने देखते हैं, हम उन्हें साकार करते हैं'' विषयवस्तु पर एक जीवंत एवं भव्य अंतर-विद्यालयी उत्सव का आयोजन किया गया। आयोजन कन्वीनर श्रीमती वीना जामड़ एवं प्रधानाचार्या श्रीमती आशी श्रीवास्तव के कुशल नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ कन्वीनर श्रीमती वीना जामड़, एफआईसीसीआई एफएलओ की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं प्रख्यात निर्णायक श्रीमती नीता बूचरा तथा प्रधानाचार्या श्रीमती आशी श्रीवास्तव ने दीप प्रज्वलित कर किया। उत्सव में शहर के प्रतिष्ठित विद्यालयों के विद्यार्थियों ने विभिन्न रचनात्मक एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस दौरान पांच प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें नृत्य-नाटिका

प्रतियोगिता का विषय सपने से साकार तक, फिल्म निर्माण प्रतियोगिता का विषय छोटे प्रयास, बड़े बदलाव, पारंपरिक योगासन प्रतियोगिता का विषय योग से निर्माण, भजन गायन प्रतियोगिता का विषय सुरों की सृष्टि तथा भारतीय कला के रंग प्रतियोगिता का विषय भारतीय संस्कृति का कैनवास रहा। उक्त पांचों प्रतियोगिताओं के निर्णायक जयपुर के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े प्रतिष्ठित एवं प्रख्यात व्यक्तित्व थे, जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में विशिष्ट पहचान बनाई है। विद्यार्थियों ने प्रभावशाली प्रस्तुतियों एवं कलात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से नवाचार, सृजनात्मकता और सांस्कृतिक गौरव का शानदार प्रदर्शन किया। प्रतियोगिताओं का मूल्यांकन प्रख्यात निर्णायकों द्वारा किया गया तथा परिणामों की घोषणा उत्साह और उमंग के साथ की गई। उप-प्रधानाचार्य श्री अविनाश जैन ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ परिणामों की घोषणा की। उन्होंने सभी प्रतिभागियों, मार्गदर्शकों एवं आयोजन टीम के प्रयासों की सराहना करते हुए उत्सव को भव्य एवं सफल बनाने के लिए सभी का आभार व्यक्त किया। इस आयोजन ने युवा प्रतिभाओं को अपनी दृष्टि एवं विचारों को अभिव्यक्त करने, भारतीय संस्कृति का उत्सव मनाने तथा अपने सपनों को वास्तविकता में बदलने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान किया।

राजनीति

विकास के नाम पर उजड़ती गांवों की हरियाली

प्रवीण कुमार

राजस्थान का उदयपुर केवल ऐतिहासिक किलों और राजमहलों के लिए ही नहीं, बल्कि झीलों, पहाड़ों और हरियाली के लिए भी जाना जाता है। लेकिन शहर के उत्तरी हिस्से में बसे सुखेर गांव की बदलती तस्वीर इस खूबसूरत पहचान के सामने गंभीर सवाल खड़े करती है। अरावली की पहाड़ियों की गोद में बसा यह इलाका कभी शांत वातावरण, खेतों, पेड़-पौधों और मौसमी जलधाराओं से घिरा हुआ था। तेजी से फैलते शहरीकरण ने सुखेर की तस्वीर बदलनी शुरू कर दी है। पर्यटन के विस्तार और शहर में जमीन की बढ़ती कीमतों के कारण लोगों ने शहर से बाहर की जमीनों का रुख किया। धीरे-धीरे खेतों की जगह मकानों और कॉलोनियों ने ले ली। जिस जमीन पर कभी फसलें उगती थीं, वहां अब कंक्रीट की इमारतें दिखाई देती हैं। यह केवल जमीन के इस्तेमाल में बदलाव नहीं है, बल्कि उस पूरे पारिस्थितिक तंत्र में परिवर्तन है, जिस पर गांव का जीवन टिका था। सुखेर में बढ़ते निर्माण के साथ पानी पर दबाव भी बढ़ा है। आबादी बढ़ने के साथ घरेलू जरूरतें बढ़ती हैं और व्यावसायिक गतिविधियां भी अतिरिक्त पानी मांगती हैं। ऐसे में भूजल पर निर्भरता बढ़ना स्वाभाविक है। केंद्रीय भूजल बोर्ड के 2023 के आकलन में उदयपुर शहरी क्षेत्र में भूजल दोहन का स्तर उपलब्ध वार्षिक निकासी योग्य संसाधन के लगभग 99.86 प्रतिशत तक दर्ज किया गया था। राजस्थान की व्यापक तस्वीर भी चिंताजनक है। केंद्रीय भूजल बोर्ड के मई 2025 के आकलन के अनुसार अगस्त 2024 से मई 2025 के बीच विश्लेषित 972 निगरानी केंद्रों में 76 प्रतिशत पर जलस्तर में गिरावट दर्ज की गई। सुखेर के आसपास औद्योगिक गतिविधियों का विस्तार इस चिंता को और गंभीर बनाता है। विकास और रोजगार के नाम पर उद्योग आते हैं तो उम्मीद होती है कि स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। लेकिन यदि औद्योगिक गतिविधियां स्थानीय आबादी को पर्याप्त रोजगार देने के बजाय हवा, पानी और जमीन पर दबाव बढ़ाएं, तो विकास का लाभ और उसकी कीमत असमान हो जाती है।

संपादकीय

लोकतंत्र में दबाव नहीं, संवाद बेहद जरूरी

किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में असहमति, विरोध और अपनी मांगों को रखने का अधिकार नागरिकों और संगठनों को प्राप्त है। लोकतंत्र की यही खूबी है कि इसमें अलग-अलग विचारों और मतों के लिए जगह होती है। लेकिन जब विरोध की भाषा धमकी, दबाव या भय पैदा करने की सीमा तक पहुंचने लगे, तब मामला केवल किसी एक संगठन या व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि लोकतांत्रिक मर्यादाओं और कानून के शासन से

जुड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न बन जाता है। सीजेपी की कथित धमकी को भी इसी व्यापक संदर्भ में देखा जाना चाहिए। लोकतंत्र में सरकार की नीतियों की आलोचना करना, न्यायिक या संवैधानिक संस्थाओं के समक्ष अपनी बात रखना और जनमत तैयार करना पूरी तरह वैध और लोकतांत्रिक रास्ते हैं। लेकिन किसी भी पक्ष को यह अधिकार नहीं दिया जा सकता कि वह धमकी या दबाव के जरिए प्रशासन, मीडिया, राजनीतिक दलों अथवा आम नागरिकों को प्रभावित करने का प्रयास करे। मतभेद कितने भी गंभीर क्यों न हों, उनका समाधान संवाद, संवैधानिक प्रक्रिया और कानून के माध्यम से ही होना चाहिए। सीजेपी की ओर से सामने आई कथित धमकी ने स्वाभाविक रूप से कई सवाल खड़े किए हैं। आखिर ऐसी भाषा की आवश्यकता क्यों पड़ी? क्या संगठन अपनी बात मजबूती से रखने के लिए लोकतांत्रिक और कानूनी माध्यमों का इस्तेमाल नहीं कर सकता? यदि किसी मुद्दे पर गंभीर आपत्ति है तो उसके समर्थन में तथ्य, दस्तावेज और ठोस तर्क प्रस्तुत किए जाने चाहिए। धमकी किसी दावे को मजबूत नहीं करती, बल्कि उसकी विश्वसनीयता पर ही सवाल खड़े करती है। यह भी महत्वपूर्ण है कि ऐसी घटनाओं को केवल राजनीतिक चश्मे से देखने के बजाय कानून के समान सिद्धांतों के आधार पर देखा जाए। सत्ता पक्ष हो या विपक्ष, सामाजिक संगठन हो या कोई प्रभावशाली व्यक्ति–कानून सबके लिए समान होना चाहिए। प्रशासन की जिम्मेदारी है कि वह किसी भी दबाव में आए बिना निष्पक्ष जांच करे। यदि धमकी कानून के दायरे में अपराध बनती है तो नियमानुसार कार्रवाई होनी चाहिए और यदि आरोप प्रमाणित नहीं होते हैं तो तथ्यों को स्पष्ट रूप से सामने रखा जाना चाहिए। मीडिया की भूमिका भी यहां बेहद महत्वपूर्ण है। धमकी जैसी खबरों को सनसनीखेज बनाने के बजाय उनके वास्तविक तथ्यों की जांच करना जरूरी है। आरोप और प्रमाण के बीच अंतर बनाए रखना पत्रकारिता की मूल जिम्मेदारी है। अधूरी जानकारी, एकतरफा प्रस्तुति या उत्तेजक भाषा समाज में अनावश्यक तनाव पैदा कर सकती है। इसलिए मीडिया को तथ्यों की पुष्टि के साथ जिम्मेदार और संतुलित रिपोर्टिंग करनी चाहिए। आज देश में लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति विश्वास मजबूत करने की आवश्यकता है। इसके लिए राजनीतिक और सामाजिक संगठनों को अपनी भाषा और तौर-तरीकों में संयम रखना होगा। सरकार को आलोचना सुननी होगी और विरोध करने वालों को भी कानून की सीमाओं का सम्मान करना होगा।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

यूपीआई पर शुल्क और विवाद

डा. अश्विनी महाजन

हाल ही में संयुक्त राज्य अमरीका व्यापार प्रतिनिधि (यूएसटीआर) की रिपोर्ट में भारत की शून्य एमडीआर नीति और यूपीआई जैसे डिजिटल भुगतान तंत्र को लेकर आपत्ति जताई गई। इसी बीच लोकसभा में 6 अगस्त 2026 को पेमेंट एंड सेटलमेंट सिस्टम एक्ट, 2007 में संशोधन विधेयक पारित होने के बाद यूपीआई और अन्य अधिसूचित इलेक्ट्रॉनिक भुगतानों पर मर्चेंट डिस्काउंट रेट (एमडीआर) लगाने की वैधानिक रोक हटने का मुद्दा चर्चा में है। प्रस्तावित व्यवस्था में 2000 रुपये तक के भुगतान निशुल्क रहने की बात कही जा रही है, जबकि इससे अधिक के लेन-देन पर विक्रेताओं से एमडीआर वसूला जा सकता है। दर कितनी होगी, यह अभी स्पष्ट नहीं है। सरकार का तर्क है कि यूपीआई का संचालन निशुल्क होने के बावजूद इसकी लागत किसी न किसी को वहन करनी पड़ती है। बैंक, भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई) और भुगतान कंपनियां सर्वर, साइबर सुरक्षा, तकनीकी ढांचे और विस्तार पर खर्च करती हैं। इसलिए यूपीआई को सुरक्षित और भरोसेमंद बनाए रखने के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता है, ताकि इसका विस्तार निरंतर जारी रहे। जिस तरह सड़क, स्ट्रीट लाइट और कानून-व्यवस्था आर्थिक गतिविधियों को आसान बनाते हैं, उसी तरह यूपीआई कारोबार और लेन-देन को सुगम बनाता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता इसकी व्यापक पहुंच और कम लागत है। भारत लंबे समय से ऊंची लॉजिस्टिक लागत की चुनौती से जूझता रहा है। पिछले वर्षों में इसमें कमी आई है और डिजिटल भुगतान ने कारोबार की लागत घटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यदि इस व्यवस्था पर शुल्क बढ़ता है तो छोटे व्यापारियों, उपभोक्ताओं और डिजिटल लेन-देन की गति पर इसका असर पड़ सकता है। सवाल यह भी है कि क्या यूपीआई पर शुल्क लगाने का विचार अंतरराष्ट्रीय दबाव से प्रभावित है? यूएसटीआर की रिपोर्ट में शून्य एमडीआर, रूपे कार्ड का विस्तार, रूपे क्रेडिट कार्ड को यूपीआई से जोड़ने, डाटा स्थानीयकरण और बाजार हिस्सेदारी संबंधी नियमों को अमेरिकी कंपनियों के लिए बाधा बताया गया है। वीजा और मास्टरकार्ड जैसे अंतरराष्ट्रीय कार्ड नेटवर्क के विपरीत यूपीआई ने विक्रेताओं को कम लागत वाला विकल्प दिया है। इसलिए स्वाभाविक है कि इसकी सफलता ने पारंपरिक कार्ड भुगतान मॉडल को चुनौती दी है। सबसे अहम और बुनियादी सवाल है कि सरकार और वित्तीय व्यवस्था पर यूपीआई की वास्तविक लागत कितनी है और उसके बदले अर्थव्यवस्था को कितना लाभ मिल रहा है। इसका सामाजिक लाभ केवल लेन-देन की लागत से नहीं मापा जा सकता। यूपीआई पर शुल्क लगाने से पहले व्यापक लागत-लाभ विश्लेषण होना चाहिए। यदि सरकार का उद्देश्य यूपीआई की सुरक्षा और विस्तार के लिए संसाधन जुटाना है तो इसके वैकल्पिक मॉडल भी तलाशे जा सकते हैं। यूपीआई भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था की आधारभूत संरचना बन चुका है। इसलिए इसकी सफलता का लक्ष्य केवल राजस्व जुटाना नहीं, बल्कि कम लागत, व्यापक पहुंच और सुरक्षित, भरोसेमंद डिजिटल भुगतान सुनिश्चित करना होना चाहिए। किसी भी शुल्क व्यवस्था का निर्धारण करते समय यह ध्यान रखना होगा कि कहीं राजस्व जुटाने की कोशिश उस सुविधा को ही महंगा न बना दे, जिसने भारत में डिजिटल भुगतान को देशभर में जन-जन तक पहुंचाया है।

गौरैया, पक्षी और तितलियां हमारे आसपास से क्यों गायब हो रही हैं?

डॉ. विजय गर्ग

एक समय था जब लगभग हर गांव, कस्बे और शहर की सुबह गौरैयों और अन्य पक्षियों की चहचहाहट से शुरू होती थी। तितलियां फूलों से फूलों तक मंडराती थीं और बगीचों, आंगनों तथा खेतों में रंग भर देती थीं। आज बहुत से लोग महसूस करते हैं कि ये परिचित जीव उनके आसपास पहले की तुलना में कम दिखाई देते हैं। इनका कम होना केवल प्राकृतिक सुंदरता का नुकसान नहीं है, बल्कि यह हमारे स्थानीय पर्यावरण में हो रहे बदलावों का संकेत भी हो सकता है। गौरैया, अन्य पक्षी और तितलियां पारिस्थितिकी तंत्र का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इनके अस्तित्व के लिए उपयुक्त आवास, भोजन, पानी, पेड़-पौधे और सुरक्षित वातावरण आवश्यक हैं। इनके घटने के पीछे कई कारण हैं, जिनमें से अधिकांश सीधे या अप्रत्यक्ष रूप से मानवीय गतिविधियों से जुड़े हैं। सबसे प्रमुख कारणों में से एक है प्राकृतिक आवास का नष्ट होना। तेजी से बढ़ते शहरीकरण ने पेड़ों, खुले स्थानों, बगीचों, झाड़ियों, तालाबों और प्राकृतिक वनस्पतियों की जगह इमारतों, सड़कों और कंक्रीट ने ले ली है। गौरैया पहले घरों की छतों, दीवारों, बालकनियों और छोटी जगहों में घोंसले बना लेती थीं। आधुनिक इमारतों में ऐसी जगहें कम होती जा रही हैं। इसी प्रकार तितलियों को भोजन, अंडे देने और अपना जीवन चक्र पूरा करने के लिए विशेष पौधों की आवश्यकता होती है। प्राकृतिक वनस्पति के समाप्त होने से उनके भोजन और प्रजनन के स्थान भी कम हो जाते हैं। एक अन्य महत्वपूर्ण कारण है कीटों की संख्या में कमी। कई पक्षी कीटों पर निर्भर रहते हैं, विशेषकर अपने बच्चों को भोजन देने के समय। तितलियां और अन्य परागणकर्ता भी फूलों वाले पौधों पर निर्भर होते हैं। कृषि और बागवानी में रसायनों तथा कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग से कीटों की संख्या कम हो सकती है और खाद्य श्रृंखला प्रभावित हो सकती है। कीटों की कमी का सीधा प्रभाव उन पक्षियों पर पड़ सकता है जो इन्हें भोजन के रूप में खाते हैं। स्थानीय पौधों की कमी भी चिंता का विषय है। स्थानीय पेड़, झाड़ियां, घास और फूलदार पौधे लंबे समय से स्थानीय जीव-जंतुओं के साथ विकसित हुए हैं। वे पक्षियों और तितलियों को भोजन तथा आश्रय प्रदान करते हैं। विविध प्राकृतिक वनस्पतियों की जगह केवल कुछ सजावटी पौधे लगाने से बगीचा सुंदर तो दिखाई दे सकता है, लेकिन उसमें जैव विविधता के लिए आवश्यक संसाधन कम हो सकते हैं। स्थानीय फूलदार पौधे और पेड़ लगाना इसलिए महत्वपूर्ण है। आधुनिक शहरी निर्माण और डिजाइन भी वन्यजीवों को प्रभावित करते हैं। पुराने घरों में आंगन, छतों की खाली जगह, छोटे छेद और आसपास पेड़-पौधे होते थे, जो गौरैयों के लिए उपयोगी थे। आधुनिक निर्माण में कांच, कंक्रीट और बंद सतहों का अधिक उपयोग होता है, जिससे पक्षियों के लिए घोंसले बनाने की जगह कम हो जाती है। सड़कों और बस्तियों के विस्तार से प्राकृतिक आवास छोटे-छोटे हिस्सों में बंट जाते हैं। प्रदूषण भी एक गंभीर समस्या है। वायु प्रदूषण जीव-जंतुओं के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। प्रदूषित पानी जलीय पारिस्थितिकी तंत्र और उससे जुड़ी खाद्य श्रृंखलाओं को नुकसान पहुंचा सकता है। प्लास्टिक कचरा प्राकृतिक आवास को खराब करता है और जीवों के लिए खतरा पैदा कर सकता है। यातायात, निर्माण और मशीनों का अत्यधिक शोर पक्षियों के संचार को प्रभावित कर सकता है। रात में अत्यधिक कृत्रिम रोशनी भी कीटों और अन्य जीवों के प्राकृतिक व्यवहार को प्रभावित कर सकती है। जलवायु परिवर्तन भी एक बढ़ती हुई चुनौती है। तापमान, वर्षा और मौसम के समय में बदलाव से फूलों के खिलने, कीटों की उपलब्धता और पक्षियों के प्रजनन पर प्रभाव पड़ सकता है। यदि पौधे पहले फूलने लगें या कीटों की उपलब्धता का समय बदल जाए, तो भोजन की उपलब्धता और पक्षियों की आवश्यकताओं के बीच असंतुलन पैदा हो सकता है। अत्यधिक गर्मी, सूखा, बाढ़ और मौसम की अन्य चरम घटनाएं भी वन्यजीवों पर अतिरिक्त दबाव डालती हैं। इन जीवों का कम होना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वे पारिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाते हैं। पक्षी कीटों की संख्या नियंत्रित करने, बीजों को फैलाने और खाद्य श्रृंखला के संतुलन में योगदान देते हैं। तितलियां और अन्य कीट परागण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे कई अन्य जीवों के लिए भोजन का स्रोत भी हैं। इसलिए जैव विविधता में कमी का प्रभाव केवल एक प्रजाति के गायब होने तक सीमित नहीं रहता। इनकी रक्षा के लिए हमेशा बड़े संरक्षण प्रोजेक्ट की आवश्यकता नहीं होती। व्यक्तियों और समुदायों के छोटे-छोटे प्रयास भी महत्वपूर्ण बदलाव ला सकते हैं। स्थानीय पेड़ और फूलदार पौधे लगाना भोजन तथा आश्रय उपलब्ध करा सकता है। घरों और बगीचों में अनावश्यक कीटनाशकों के प्रयोग से बचना चाहिए। गर्मी के

मौसम में पक्षियों के लिए स्वच्छ पानी रखा जा सकता है और पानी के बर्तनों की नियमित सफाई की जानी चाहिए। स्कूल, पार्क और सामुदायिक स्थान छोटे जैव विविधता उद्यान विकसित कर सकते हैं। स्थानीय प्रशासन पुराने पेड़ों की रक्षा, तालाबों का संरक्षण और हरित क्षेत्रों का विस्तार कर सकता है। किसान पर्यावरण के अनुकूल कीट प्रबंधन के तरीकों को अपनाकर जैव विविधता के संरक्षण में योगदान दे सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात है कि हमें प्रकृति से अपना संबंध फिर मजबूत करना होगा। बच्चों को पक्षियों, तितलियों, पेड़-पौधों और कीटों का निरीक्षण करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। प्रकृति के प्रति जागरूकता बचपन से विकसित होने पर संरक्षण की भावना भी मजबूत होती है। गौरैया, पक्षियों और तितलियों का कम होना केवल बीते समय की याद नहीं है। यह संकेत हो सकता है कि हमारे स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र पर दबाव बढ़ रहा है। स्वस्थ पर्यावरण के लिए पेड़, पौधे, कीट, पानी, आश्रय और जैव विविधता आवश्यक हैं। यदि हम चाहते हैं कि आने वाली पीढ़ियां भी पक्षियों की चहचहाहट सुनें और अपने आसपास तितलियों को उड़ते देखें, तो संरक्षण का प्रयास आज से ही शुरू करना होगा। जैव विविधता की रक्षा केवल जंगलों और वन्यजीव अभयारण्यों में नहीं होती; इसकी शुरूआत हमारे घरों, बगीचों, स्कूलों, गांवों, गलियों और शहरों से होती है। छोटे जीवों की रक्षा करना वास्तव में उस प्राकृतिक संतुलन की रक्षा करना है, जिस पर हमारा अपना भविष्य भी निर्भर करता है।

डॉ. विजय गर्ग:
सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शिक्षाविद् एवं विज्ञान लेखक

गिरिराज शरण को राजस्थान कोहिनूर 2026 से सम्मानित किया गया

जयपुर. शाबाश इंडिया

स्वराज भारत 24 द्वारा साइंस पार्क सभागार में आयोजित ''राजस्थान कोहिनूर 2026'' अवॉर्ड समारोह में जयपुर के समाजसेवी एवं आध्यात्मिक वक्ता गिरिराज शरण को पिछले 8 वर्षों से निरंतर समाजसेवा एवं गोसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए ''राजस्थान कोहिनूर 2026'' सम्मान से सम्मानित किया गया। गिरिराज शरण को समाजसेवा एवं गोसेवा के क्षेत्र में उनके निरंतर योगदान और उल्लेखनीय सेवाओं के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया।

श्रमण संस्कृति में श्रमणत्व रक्षा का महापर्व है रक्षा बंधन

700 मुनिराजों के उपसर्ग-विजय की स्मृति में मनाया जाता है वात्सल्य पर्व

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा का दिन सामान्य रूप से रक्षा बंधन के नाम से जाना जाता है, लेकिन श्रमण संस्कृति में यह केवल कलाई पर रक्षा सूत्र बांधने का पर्व नहीं, बल्कि धर्म, साधना और श्रमणत्व की रक्षा का संकल्प दिवस है। जैन परंपरा में इस दिन 700 मुनिराजों की घोर उपसर्ग से रक्षा की स्मृति में वात्सल्य एवं रक्षा बंधन पर्व मनाया जाता है। जैन परंपरा के अनुसार उज्जयिनी के राजा श्रीधर्म के चार मंत्री–बलि, बृहस्पति, नमुचि और प्रह्लाद–शास्त्रार्थ में पराजित होने के बाद श्रुतसागर मुनिराज पर प्रहार करने का प्रयास करने लगे। राजा ने उन्हें राज्य से निष्कासित कर दिया। अपमानित होकर चारों हस्तिनापुर के राजा पद्म की शरण में पहुंच गए। इसी बीच आचार्य अकंपन मुनिराज 700 मुनि शिष्यों के संघ सहित हस्तिनापुर पहुंचे। मुनिराजों की साधना और आत्मबल देखकर बलि के मन में पुराना अपमान जाग उठा और उसने उनसे प्रतिशोध लेने का निश्चय किया।

घोर उपसर्ग के बीच अडिग रही मुनियों की साधना

बलि ने राजा पद्म से सात दिनों के लिए राज्य प्राप्त कर लिया। सत्ता मिलते ही उसने आचार्य अकंपन सहित 700 मुनिराजों के साधना स्थल के चारों ओर अग्नि प्रज्वलित करवा दी। धुआं, ताप और दुर्गंध से मुनिराजों को अत्यंत कष्ट होने लगा। उनका आहार-विहार तक बाधित हो गया, लेकिन मुनियों ने बाहरी कष्टों के सामने अपनी आंतरिक शांति और समता को नहीं छोड़ा। मुनिराजों ने आत्मसाधना में लीन रहते हुए संकल्प किया कि जब तक उपसर्ग समाप्त नहीं होगा, तब तक वे अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे। यह संकट श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन चरम पर था।

विष्णुकुमार मुनिराज बने धर्मरक्षा के प्रतीक

मुनिराजों पर आए इस भीषण संकट की जानकारी विष्णुकुमार मुनिराज को हुई। उन्होंने अपनी विक्रिया ऋद्धि का प्रयोग करते हुए वामन का रूप धारण किया और राजा बलि के पास पहुंचे। उन्होंने भिक्षा में तीन पग भूमि मांगी। बलि द्वारा दान की स्वीकृति मिलते ही विष्णुकुमार मुनिराज ने अपना विराट रूप धारण किया। एक पग सुमेरु पर्वत पर और दूसरा मानुषोत्तर पर्वत पर रखा। तीसरे पग के लिए स्थान शेष न रहने पर बलि को अपनी भूल का बोध हुआ। उसने क्षमा याचना की। इस प्रकार विष्णुकुमार मुनिराज ने 700 मुनिराजों को घोर उपसर्ग से मुक्त कराया। मुनिराजों की साधना, समता और धर्म के प्रति अडिग निष्ठा की यह घटना आज भी श्रमण संस्कृति के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

रक्षा सूत्र बना परस्पर वात्सल्य और चल तीर्थों की रक्षा का संकल्प

मुनिराजों की रक्षा की इस पावन स्मृति में रक्षा बंधन को जैन समाज में वात्सल्य पर्व के रूप में भी मनाया जाता है। यह पर्व हमें केवल एक-दूसरे की रक्षा का नहीं, बल्कि धर्म, साधना, संतों और श्रमण संस्कृति के संरक्षण का संकल्प देता है। इस दिन मंदिरों में सात सौ मुनिराजों की पूजन, विधान एवं अर्घ्य समर्पण किया जाता है। देव-शास्त्र-गुरु के समक्ष रक्षा सूत्र बांधकर धर्म एवं संस्कृति की रक्षा का संकल्प लिया जाता है। मुनि विष्णुकुमार की आराधना के साथ उपसर्ग विजेता 700 मुनिराजों को श्रद्धापूर्वक नमन किया जाता है।

श्रेयांसनाथ भगवान का निर्वाणोत्सव भी

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा का यह दिन जैन धर्म के 11वें तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ के निर्वाण दिवस के रूप में भी श्रद्धा और भक्ति से मनाया जाता है। अतः यह पर्व एक साथ धर्मरक्षा, संतवात्सल्य, आत्मसाधना और निर्वाण-भक्ति का संदेश देता है।

जयपुर में संत सान्निध्य में होंगे विशेष आयोजन

जयपुर के जनकपुरी स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर में आचार्य श्री 108 आदित्य सागर जी ससंघ के सान्निध्य में तीन दिवसीय श्रमणत्व रक्षा महामहोत्सव का आयोजन किया जाएगा। इसके अतिरिक्त मीरा मार्ग, वरुण पथ, साधु सेवा तीर्थ पदमपुरा, मंगल विहार, चित्रकूट, मुरलीपुरा, कमला नेहरू नगर, भट्टारक जी की नसियां सहित अनेक स्थानों पर रक्षा बंधन एवं वात्सल्य पर्व के धार्मिक आयोजन होंगे। मंदिरों में मुनि विष्णुकुमार की पूजन के पश्चात उपसर्ग-विजेता 700 मुनिराजों को अर्घ्य समर्पित कर नमन किया जाएगा। देव-शास्त्र-गुरु के समक्ष रक्षा सूत्र बांधने के साथ धर्मरक्षा का संकल्प लिया जाएगा। अनेक जिनालयों में भक्ति संध्या, विधान एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रम भी आयोजित होंगे। पार्श्वनाथ मंदिर सोनियांन, चूलगिरी, जग्गा की बावड़ी, सांवलाजी आमेर सहित विभिन्न जैन मंदिरों में भी रक्षा बंधन पर्व पर विशेष धार्मिक आयोजन होंगे। रक्षा बंधन का संदेश स्पष्ट है–रक्षा केवल शरीर की नहीं, संस्कारों की हो; रक्षा केवल व्यक्ति की नहीं, धर्म की हो; और बंधन केवल सूत्र का नहीं, परस्पर वात्सल्य एवं श्रमणत्व रक्षा के संकल्प का हो।

पदम जैन बिलाला
जनकपुरी, जयपुर

फिनप्रोथ को-ऑपरेटिव बैंक की भीलवाड़ा में नई शाखा का शुभारम्भ

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

उत्तर भारत में सहकारी क्षेत्र के अग्रणी मल्टी स्टेट बैंक फिनप्रोथ को-ऑपरेटिव बैंक लि. की एक नई शाखा ए-186, आरओ के कॉलोनी, राजीव गांधी पार्क के सामने, भीलवाड़ा (राजस्थान) 311001 का आज दिनांक 24 अगस्त 2026 को शुभारम्भ हुआ। बैंक के संचालक मंडल के चेयरमैन श्री सुनील सक्सेना ने फीता काटकर उद्घाटन किया। इस अवसर पर बैंक के संचालक मंडल के वाइस चेयरमैन श्री सुनील बड़सी, निदेशक श्री मुकेश कपूर के साथ प्रबन्ध निदेशक श्री सुनील पामेचा एवं बैंक अधिकारी एवं गणमान्य ग्राहक उपस्थित थे। बैंक की यह शाखा अन्य शाखाओं की तरह पूर्णतया कम्प्यूटरीकृत एवं वातानुकूलित है। शाखा में उन्नत सुरक्षा से सुसज्जित लॉकर सुविधा के साथ रूपे एटीएम सुविधा भी उपलब्ध है। बैंक के चेयरमैन श्री सुनील सक्सेना ने बताया कि फिनप्रोथ को-ऑपरेटिव बैंक लि. उत्तर भारत का एक अग्रणी सुदृढ़ मल्टी स्टेट सहकारी बैंक है। उन्होंने आगे बताया कि बैंक अपनी स्थापना से 67 वर्षों के सफल संचालन के साथ वर्तमान में 27 शाखाओं एवं एक एक्सटेंशन काउंटर के करीब 50,000 से अधिक ग्राहकों को उच्च स्तर की बैंकिंग सेवाएं प्रदान कर रहा है। बैंक के वाइस चेयरमैन श्री सुनील बड़सी ने बताया कि बैंक के फाउंडर चेयरमैन, लेट सेठ हरिश चं. गोलछा द्वारा स्थापित इस बैंक ने सफलतापूर्वक 67 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं एवं उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में बैंक ने 975.46 करोड़ रुपये का व्यापार किया है। कड़ी प्रतिस्पर्धा के बावजूद, बैंक ने वर्ष 2025-26 में 821 लाख रुपये का लाभ अर्जित किया है। बैंक के ग्राहकों को देशभर में 2.5 लाख से अधिक एटीएम पर रुपे डेबिट कार्ड की सुविधा उपलब्ध है। बैंक अपने ग्राहकों को यूपीआई/ई-कॉम/क्यूआर कोड के माध्यम से भुगतान सुविधा प्रदान कर रहा है। साथ ही मोबाइल ऐप के द्वारा आरटीजीएस/एनईएफटी एवं आईएमपीएस के माध्यम से ऑनलाइन भुगतान की सुविधा भी उपलब्ध है। बैंक के प्रबन्ध संचालक श्री सुनील पामेचा ने बताया कि वर्तमान में बैंक की कुल 28 शाखाएं एवं एक एक्सटेंशन काउंटर हैं। बैंक की सुदृढ़ ऋण-स्वीकृति प्रणाली एवं उत्कृष्ट अनुसरण एवं वसूली प्रबन्धन के फलस्वरूप बैंक का नेट एनपीए का प्रतिशत लगातार पिछले 23 वर्षों से शून्य है। बैंक पिछले 30 वर्षों से अंशधारकों को लाभांश वितरित करता आ रहा है।

"एक भारत-श्रेष्ठ भारत" के संदेश से गूंजा गांधी भवन

देश की एकता और राष्ट्रीय चेतना पर दिल्ली विश्वविद्यालय के गांधी भवन में हुआ विशेष आयोजन

नई दिल्ली. शाबाश इंडिया

दिल्ली विश्वविद्यालय के गांधी भवन एवं राष्ट्रीय सैनिक संस्था के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्र की एकता, अखंडता, देशभक्ति, सांस्कृतिक विविधता और राष्ट्रीय चेतना को समर्पित विशेष व्याख्यान "एक भारत-श्रेष्ठ भारत" का आयोजन गांधी भवन के प्रांगण में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दिल्ली विश्वविद्यालय के डीन ऑफ कॉलेजेज एवं गांधी भवन के चेयरमैन प्रो. बलराम पाणि रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय सैनिक संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं वीर चक्र से सम्मानित कर्नल तेजेंद्र पाल त्यागी ने की। कार्यक्रम के मुख्य संयोजक पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग के अध्यक्ष एवं गांधी भवन, दिल्ली विश्वविद्यालय के निदेशक प्रो. के.पी. सिंह रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं गांधी भवन में हस्तनिर्मित सूत की माला से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ हुआ। उद्घाटन वक्तव्य में प्रो. के.पी. सिंह ने कहा कि "एक भारत-श्रेष्ठ भारत" केवल एक विचार या अभियान नहीं, बल्कि भारत की विविध भाषाओं, संस्कृतियों, परंपराओं, क्षेत्रों और समुदायों को एक राष्ट्रीय भावना में जोड़ने का संकल्प है। उन्होंने विद्यार्थियों से देश की उपलब्धियों, स्वतंत्रता सेनानियों तथा सीमा पर राष्ट्र की रक्षा करने वाले जवानों के योगदान को समझने और अपने जीवन में राष्ट्रहित, अनुशासन, जिम्मेदारी तथा सामाजिक समरसता के मूल्यों को अपनाने का आह्वान किया। प्रो. सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय केवल शिक्षा और शोध का केंद्र नहीं, बल्कि सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना के निर्माण का भी महत्वपूर्ण मंच है। गांधी भवन महात्मा गांधी के विचारों–सत्य, अहिंसा, शांति, सद्भाव, समानता और सामाजिक समरसता–को नई पीढ़ी तक पहुंचाने के साथ विद्यार्थियों को राष्ट्र एवं समाज के प्रति उनके दायित्वों से जोड़ने के लिए निरंतर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करता रहा है। उन्होंने युवाओं, विशेषकर जेन-जी, की राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देते हुए कहा कि भारत का भविष्य आज के युवाओं के हाथों में है। युवाओं में ऊर्जा, नवीन सोच, तकनीकी दक्षता और परिवर्तन की क्षमता है। यदि इन गुणों को अच्छे संस्कार, अनुशासन, समय के सम्मान, कर्तव्यबोध और राष्ट्रप्रेम से जोड़ा जाए तो यही युवा भारत को सशक्त, समृद्ध और श्रेष्ठ राष्ट्र बनाने में अग्रणी भूमिका निभा सकते हैं। राष्ट्रीय सैनिक संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं वीर चक्र से सम्मानित कर्नल तेजेंद्र पाल त्यागी ने कहा कि "एक भारत-श्रेष्ठ भारत" की भावना को मजबूत करने के लिए देश की विविध भाषाओं, संस्कृतियों, परंपराओं और क्षेत्रों के प्रति सम्मान तथा आपसी भाईचारा आवश्यक है। भारत की सबसे बड़ी शक्ति उसकी विविधता में एकता है। सामाजिक समरसता, पारस्परिक सम्मान और सहयोग की भावना को बढ़ावा देकर युवा समाज में एकता और सद्भाव का वातावरण निर्मित कर सकते हैं। कर्नल त्यागी ने कहा कि राष्ट्र निर्माण केवल यह सोचने से नहीं होगा कि देश हमें क्या दे सकता है, बल्कि हमें यह विचार विकसित करना होगा कि हम देश को क्या दे सकते हैं। मुख्य अतिथि प्रो. बलराम पाणि ने विश्वविद्यालय समुदाय के लिए ऐसे कार्यक्रमों की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारत की विविधता को समझना और उसका सम्मान करना ही राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने का आधार है। उन्होंने युवाओं से शिक्षा के साथ-साथ देश के सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय जीवन से भी सक्रिय रूप से जुड़ने का आह्वान किया।

राघौगढ़ में रक्षाबंधन महामंडल विधान का शुभारंभ

भगवान की भक्ति निष्काम भाव से करें, फल अवश्य मिलेगा : मुनि श्रमण सागरजी

राघौगढ़. शाबाश इंडिया

धर्मनगरी राघौगढ़ में चातुर्मास कर रहे मुनि श्रमण सागरजी एवं मुनि ओंकार सागरजी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित चार दिवसीय श्री रक्षाबंधन महामंडल विधान का भव्य शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर मंगल प्रवचन करते हुए ओजस्वी वक्ता एवं बुंदेली महाकवि मुनि श्रमण सागरजी महाराज ने कहा कि इस विधान के अनुष्ठान के माध्यम से हम उपसर्ग विजेता 700 मुनिराजों का स्मरण कर उन्हें अर्घ्य समर्पित करते हैं। उन्होंने श्रद्धालुओं को मार्गदर्शन देते हुए कहा कि भगवान के दर्शन, पूजन एवं विधान आदि धार्मिक आयोजनों को मनोकामना की पूर्ति की भावना से नहीं करना चाहिए। इन धार्मिक अनुष्ठानों का निश्चित रूप से हमें फल मिलता है। मुनिराज ने कहा कि वर्षों तक भगवान की पूजा, दर्शन और भक्ति करने के बाद भी जब मनोकामना पूर्ण नहीं होती तो कई भक्त निराश होकर भगवान की भक्ति करना ही छोड़ देते हैं। भगवान की भक्ति छोड़ना अनुचित है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में पुण्य का फल नहीं मिलने का कारण पूर्व जन्म में किए गए पाप कर्म हैं। आज हम जो पुण्य अर्जित कर रहे हैं, उसका फल निश्चित रूप से हमें मिलेगा। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि किसान खेत में गेहूं बोता है और फसल आने पर गेहूं के साथ भूसा भी प्राप्त होता है।

28 अगस्त तक चलने वाले चार दिवसीय श्री रक्षाबंधन महामंडल विधान का शुभारंभ प्रातः 7 बजे भगवान के सामूहिक अभिषेक, शांतिधारा एवं धार्मिक अनुष्ठानों के साथ हुआ। इंदौर से पधारे बाल ब्रह्मचारी एवं सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठाचार्य तरुण भैया जी के मार्गदर्शन में सभी मांगलिक क्रियाएं भक्तिभाव के साथ प्रारंभ हुईं। विद्यासागर सभागार, राघौगढ़ में वेदी पर भगवान को विराजमान कर विधान का भक्तिभावपूर्वक आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रतिष्ठाचार्य तरुण भैया जी ने कहा कि राघौगढ़ नगरवासियों का सौभाग्य है कि रक्षाबंधन पर्व के पावन अवसर पर श्री रक्षाबंधन महामंडल विधान के आयोजन के माध्यम से राघौगढ़ में चातुर्मास कर रहे युगल मुनिराजों के पावन सानिध्य में उपसर्ग विजेता 700 मुनिराजों का स्मरण कर उन्हें भक्तिभाव से अर्घ्य समर्पित किया जा रहा है। विधान आयोजन के पुण्यार्जक राजेंद्र कुमार, सिद्धार्थ कुमार एवं श्रेयांश कुमार जैन मेडिकल परिवार, राघौगढ़ ने सभी साधर्मीजनों से आग्रह किया कि वे इस मांगलिक धार्मिक आयोजन में भक्तिभाव से शामिल होकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

महावीर इंटरनेशनल का राष्ट्रीय वस्त्र सेवा अभियान

सुरेश गांधी बने "कपड़ा बैंक-खुशियों का बाजार" प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय सह-समन्वयक

जयपुर. शाबाश इंडिया। 52 वर्षों से संचालित गैर-धार्मिक एवं राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त सामाजिक संस्था महावीर इंटरनेशनल द्वारा देशभर में 1 सितंबर से 30 सितंबर 2026 तक ''राष्ट्रीय वस्त्र सेवा अभियानः कपड़ा बैंक'' खुशियों का बाजार का आयोजन किया जा रहा है। संस्था के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष वीर सीए अनिल जैन, अंतरराष्ट्रीय महासचिव वीर सोहन लाल वैद्य, अंतरराष्ट्रीय कोषाध्यक्ष वीर सीए सुधीर जैन एवं राष्ट्रीय संयोजक रवींद्र कुमार जैन ने वीर सुरेश गांधी को इस महत्वाकांक्षी राष्ट्रीय प्रोजेक्ट का राष्ट्रीय सह-समन्वयक नियुक्त किया है। 'अपरिग्रह से आत्मसम्मान तक' का संदेश देने वाले इस अभियान का मुख्य उद्देश्य जरूरतमंद परिवारों को मुफ्त में वस्त्र देने के बजाय मात्र 10 रुपये की स्वाभिमान-सहयोग राशि पर उनकी पसंद के स्वच्छ, सुंदर एवं सुव्यवस्थित वस्त्र चुनने का अवसर प्रदान करना है। इसके माध्यम से जरूरतमंदों को सहायता के साथ आत्मसम्मान का अनुभव कराने का प्रयास किया जा रहा है।

अभियान की प्रमुख गतिविधियां एवं समय-रेखा

1 सितंबर-राष्ट्रीय शुभारंभः पूज्य साधु-संतों के पावन सान्निध्य में संकल्प-दीप प्रज्वलन एवं अपरिग्रह के संदेश के साथ अभियान की शुरूआत होगी।

6 से 13 सितंबर-जन-संग्रह सप्ताहः घरों, कॉलोनियों, विद्यालयों, व्यापारिक संस्थानों एवं कार्यालयों से उपयोग योग्य अतिरिक्त वस्त्रों का संग्रह किया जाएगा।

14 से 25 सितंबर-छंटाई एवं तैयारीः एकत्रित वस्त्रों का वर्गीकरण किया जाएगा। इनमें ए-श्रेणी के वस्त्र उपयोग के लिए तथा बी-श्रेणी के वस्त्र रीसाइक्लिंग के लिए रखे जाएंगे। इसके बाद वस्त्रों की धुलाई, इस्त्री, आकार के अनुसार टैगिंग एवं 'खुशियों का बाजार' की व्यवस्था की जाएगी।

26 से 29 सितंबर-खुशियों का बाजारः जरूरतमंद परिवारों के लिए गरिमापूर्ण 'खुशियों का बाजार' आयोजित किया जाएगा।

सोए हुए को जगाया जा सकता है, जागते हुए सोने का बहाना करने वाले को कैसे जगाएं

गणिनी आर्यिका सुभूषणमति माताजी

अजीत कोठिया, डडूका, बांसवाड़ा (राजस्थान)। श्री अडिन्दा पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र, अडिन्दा (उदयपुर) में अभिनंदनीय वर्षायोग के लिए विराजमान प्रखर वक्ता, चर्या शिरोमणि, गणिनी आर्यिका रत्न श्री सुभूषणमति माताजी ने मिथ्यात्व की नींद में सोए श्रावकों को जागृत करते हुए कहा कि जिनेन्द्र भक्ति पुण्यशाली जीव ही कर पाते हैं। जैन कुल में जन्म लेना और जिनेन्द्र भक्ति करना पूर्व जन्मों के पुण्य का फल है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार बिना पूंजी के व्यापार नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार जन्म-जन्मांतरों के पुण्य के बिना जिनेन्द्र भक्ति का भाव भी नहीं बनता। सातिशय क्षेत्र में आने के लिए भी अधिक पुण्य की आवश्यकता होती है। माताजी ने कहा कि जब भी क्षेत्र पर जाएं तो भगवान पार्श्वनाथ का चित्र केवल फोन के कैमरे में नहीं, बल्कि मन के कैमरे में खींचें, ताकि आंखें बंद करने पर भगवान के दर्शन फोन के कैमरे में नहीं, बल्कि मन के कैमरे में हो सकें। उन्होंने कहा...

''जपने से जब नाम तुम्हारा,
भूत-प्रेत वो करे किनारा।''

भूत-प्रेत एवं अन्य कष्ट-बाधाएं तो क्षेत्र पर आकर जिनेन्द्र दर्शन करने से दूर होती ही हैं, साथ ही मन भी प्रसन्नचित्त होता है। उन्होंने श्रद्धालुओं से कहा कि जब भी इस क्षेत्र पर आएं, ''श्री अडिन्दा पार्श्वनाथाय नमः'' की पांच माला का जाप अवश्य करें, ताकि क्षेत्र-दर्शन करना सार्थक हो। गुरु मां के संक्षिप्त किंतु सारगर्भित वचनों से भाव-विभोर होकर सभी भक्तों ने उन्हें बार-बार ''वंदामी, वंदामी, वंदामी'' कहकर नमन किया और अपने-अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान किया। यह जानकारी अंजली जैन, खतौली, मुजफ्फरनगर ने दी।

विद्यार्थियों को गुड टच एवं बैड टच की दी जानकारी

नसीराबाद (रोहित जैन)

राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर के निर्देशानुसार तथा अध्यक्ष एवं सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अजमेर के मार्गदर्शन में 25 अगस्त 2026 को तालुका नसीराबाद के न्यायिक अधिकारियों द्वारा विभिन्न विद्यालयों में विधिक जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस दौरान विद्यार्थियों को गुड टच एवं बैड टच के बारे में जागरूक किया गया। तालुका सचिव ने बताया कि राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर के राज्य स्तरीय अभियान ''ट्रांसफॉर्मेटिव ट्यूजडे'' के तहत मंगलवार को तालुका नसीराबाद में 'गुड टच एवं बैड टच' विषय पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश, नसीराबाद ममता सैनी ने सरस्वती बाल निकेतन स्कूल, नसीराबाद में तथा वरिष्ठ सिविल न्यायाधीश एवं अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, नसीराबाद सुमन गिठाला ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, दिलवाड़ा में विद्यार्थियों को गुड टच एवं बैड टच के संबंध में जानकारी दी। इस दौरान न्यायिक अधिकारियों ने विद्यार्थियों को शारीरिक, मानसिक एवं यौन दुर्व्यवहार के बारे में जागरूक करते हुए इनसे संबंधित कानूनी प्रावधानों की जानकारी दी।

श्री वर्धमान दिगंबर जैन महिला मंडल द्वारा लहरिया उत्सव का भव्य आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री वर्धमान दिगंबर जैन महिला मंडल, सेक्टर-5, प्रताप नगर, सांगानेर, जयपुर द्वारा लहरिया उत्सव का भव्य एवं आनंदमय आयोजन किया गया। महिला मंडल की मंत्री श्रीमती मीनू जैन पांड्या ने बताया कि कार्यक्रम में सभी महिलाओं ने उत्साहपूर्वक बढ़-चढ़कर भाग लिया। महिलाएं लहरिया एवं मोठड़ा की खूबसूरत साड़ियों में सज-धजकर कार्यक्रम में शामिल हुईं। इस अवसर पर ''सावन की रानी'' का चुनाव भी किया गया, जिसमें श्रीमती सीमा को सावन की रानी चुना गया। लहरिया उत्सव की थीम पर मनोरंजक गेम्स एवं हाउजी का आयोजन किया गया, जिसका सभी महिलाओं ने खूब आनंद लिया। कार्यक्रम के दौरान स्वादिष्ट स्नैक्स, चाय-कॉफी तथा इसके बाद रात्रिभोज की भी व्यवस्था की गई, जिसका सभी ने आनंद लिया। महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती निर्मला जैन ने सभी महिलाओं को एकजुट होकर ऐसे आयोजनों में बढ़-चढ़कर भाग लेने तथा मिल-जुलकर कार्यक्रम आयोजित करने के लिए प्रेरित किया। महिला मंडल की पदाधिकारी एवं कमेटी सदस्य श्रीमती ममता सेठी, श्रीमती कविता, श्रीमती वर्षा, श्रीमती अनीता एवं श्रीमती शिल्पा के सहयोग से कार्यक्रम सफलतापूर्वक एवं हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। लहरिया उत्सव महिलाओं के लिए मस्ती, उमंग, आपसी प्रेम एवं सौहार्द से भरा एक यादगार आयोजन रहा।

भाविप उदय शाखा द्वारा छात्राओं के लिए एनीमिया जांच एवं जागरूकता शिविर आयोजित

उदयपुर. शाबाश इंडिया

भारत विकास परिषद उदय शाखा द्वारा 25 अगस्त 2026 को राजकीय महात्मा गांधी गर्ल्स स्कूल, पुला में छात्राओं के लिए एनीमिया जांच एवं जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कक्षा 8वीं, 9वीं, 10वीं, 11वीं एवं 12वीं की कुल 73 छात्राओं का हीमोग्लोबिन परीक्षण किया गया। शिविर के लिए सीएमएचओ, उदयपुर की ओर से नर्सिंग स्टाफ, जांच किट एवं आवश्यक दवाइयां उपलब्ध कराई गईं। उदय शाखा के अध्यक्ष श्री शरद मंत्री, महिला सहभागिता प्रकल्प प्रभारी कुसुम बोर्दिया एवं सदस्य मंजू चौधरी ने छात्राओं को एनीमिया के कारण, लक्षण, बचाव एवं उपचार के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। साथ ही उन्हें संतुलित एवं पौष्टिक आहार लेने तथा स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने के लिए प्रेरित किया गया। शिविर के सफल आयोजन में विद्यालय की प्रधानाचार्या विद्या गौड़, समस्त अध्यापकों एवं स्टाफ का पूर्ण सहयोग रहा। उदय शाखा की ओर से सभी छात्राओं के लिए पौष्टिक आहार की व्यवस्था भी की गई। मीडिया प्रभारी सुनील गांग ने कहा कि एनीमिया जैसी स्वास्थ्य संबंधी समस्या के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए इस प्रकार के जांच एवं जागरूकता शिविर प्रत्येक विद्यालय में आयोजित किए जाने चाहिए। सेवा प्रकल्प को सफल बनाने में शाखा के सदस्य प्रेमा मंत्री, डॉ. बृजबाला शर्मा, श्वेता जैन, इंदिरा जैन, सरोज बापना, आजाद खमेसरा, स्नेहा गांग, सुरेंद्र चौधरी, सुनील गांग एवं बी.एल. खमेसरा का सराहनीय सहयोग रहा।

जिला स्तरीय जैन प्रतिभा सम्मान एवं शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न

सागर. शाबाश इंडिया

जैन मिलन शाखा मकरोनिया द्वारा जिला स्तरीय जैन प्रतिभा सम्मान समारोह का गरिमामय आयोजन आदर्श गार्डन, मोती नगर, सागर में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महावीर प्रार्थना के साथ हुआ, जिसका गायन जैन मिलन महिला शाखा, मकरोनिया की सदस्यों द्वारा किया गया। समारोह में कक्षा 10वीं एवं 12वीं में 85 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले लगभग 180 छात्र-छात्राओं तथा यूपीएससी, नीट, आईआईटी एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में चयनित लगभग 10 अभ्यर्थियों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर जैन मिलन शाखा मकरोनिया एवं जैन मिलन महिला शाखा मकरोनिया का शपथ ग्रहण समारोह भी आयोजित किया गया। शपथ ग्रहण समारोह गौरव अतिवीर कमलेंद्र जैन, एडवोकेट द्वारा कराया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वीर दिनेश जैन, करापुर ने की। उन्होंने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। शाखा मंत्री अरविंद जैन, गढ़ाकोटा ने शाखा का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए जैन मिलन शाखा की गतिविधियों एवं कार्यों की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन श्री आदेश जैन एवं संदीप जैन ने विधिवत किया। अंत में कोषाध्यक्ष हेमचंद जैन ने सभी अतिथियों, अभिभावकों एवं छात्र-छात्राओं का आभार व्यक्त किया। समारोह में ध्वजारोहण अरविंद जैन, अब्बू सौरव रोडलाइंस द्वारा किया गया। चित्र अनावरण अतिवीर प्रमोद भाईजी ने किया। दीप प्रज्वलन विनोद जैन ''आवारा'', अरुण चंदेरिया, क्षेत्रीय मंत्री जिनेश जैन, बहरोल, वीर मनीष जैन विद्यार्थी, अशोक जैन पटवारी, सुकुमाल नैनधरा, संयोजक राजेश, प्राचार्य आलोक बरायठा, संपत जैन खुरई, प्रो. आनंद जैन, सुरेश बीज निगम, रविंद्र जैन प्राचार्य, प्रदीप गुन्नौर, संतोष सेंट्रल बैंक, संतोष गढ़ाकोटा, राकेश छुल्ला, संजय शक्कर, निशिकांत सिंघई, पी.सी. जैन, अजीत बैंक, आर.के. जैन, चेतन जैन, रितेश जैन, प्रमोद जैन, महेश जैन छुल्ला, इंजीनियर दिलीप जैन, मुकेश जैन, उत्तम चंद जैन, वीर बृजेश जैन सहित अन्य गणमान्यजनों द्वारा किया गया। समारोह में बड़ी संख्या में वीर एवं वीरांगनाएं, अभिभावक तथा छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

जन्मदिन पर रक्तदान का संकल्प, मानवता के नाम समर्पित किया खास दिन

उदयपुर. शाबाश इंडिया

जन्मदिन को केवल उत्सव तक सीमित रखने के बजाय उसे सेवा और संवेदना से जोड़ते हुए राजस्थान राज्य भारत स्काउट एवं गाइड के स्थानीय संघ बड़गांव के अंतर्गत उदय ओपन रोवर क्रू, भुवाणा ने प्रेरक पहल की। रोवर लीडर एवं राष्ट्रपति स्काउट सुरेश कुमार प्रजापत के 54वें जन्मदिन के अवसर पर मेरुजी बावजी मंदिर परिसर, भुवाणा में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में रक्तदाताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर मानव सेवा का संदेश दिया।

रक्तदान शिविर प्रभारी राजेश तिवारी ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ मेरुजी बावजी, भुवाणा के भोपाली एवं संघ संरक्षक मोहनलाल डांगी ने दीप प्रज्वलित कर किया। मुख्य अतिथि किरण पोखरना तथा विशिष्ट अतिथि भुवाणा के प्रधानाचार्य मनीष की सोती एवं सायरा के प्रधानाचार्य डालचंद सुधार ने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर सभी रक्तवीरों को प्रशस्ति पत्र एवं ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित किया गया। आयोजन में रक्तागिरी विकास समिति एवं स्काउट-गाइड सदस्यों की सक्रिय भागीदारी रही। इस दौरान बाबूलाल नायक, श्रवण व्यास, सुशील सेवदा, देवी लाल गमेती, कांतिलाल जैन, भदर मेघवाल, कालूराम मेघवाल, सुशील जोशी, राहुल मेनारिया, प्रदीप गमेती, राहुल गमेती, जसवंत सुधार, गोपीलाल डांगी, शंकर डांगी, ललित गमेती, प्रदीप मेघवाल, लोकेश प्रजापति एवं पंकज जैन सहित अनेक सदस्यों ने रक्तदाताओं का उत्साह बढ़ाया। महाराणा भोपाल ब्लड बैंक एवं सरल ब्लड बैंक की टीमों ने रक्त संग्रहण की जिम्मेदारी निभाई। आयोजन ने यह संदेश दिया कि जन्मदिन की सबसे सार्थक खुशी वही है, जो किसी जरूरतमंद के जीवन में उम्मीद बन सके।

रिपोर्ट : राकेश शर्मा 'राजदीप'

भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान दीप महाअर्चना में भगवान आदिनाथ के गूंजे जयकारे

मंडल पर 48 दीपक चढ़ाकर किया प्रभु का गुणगान

जयपुर. शाबाश इंडिया। सेवा के लिए समर्पित जौहरी बाजार दिगंबर जैन महिला समिति, जयपुर के तत्वावधान में दिगंबर जैन नसिया भट्टारकजी स्थित श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में 48 दीपकों द्वारा ऋद्धि मंत्रों से युक्त भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान दीप महाअर्चना का संगीतमय आयोजन किया गया। इस अवसर पर मंदिर प्रांगण भगवान आदिनाथ के जयकारों से गूंज उठा। जौहरी बाजार दिगंबर जैन महिला समिति की अध्यक्ष स्वर्णलता अजमेरा, कार्याध्यक्ष नमिता छाबड़ा एवं मंत्री पुष्पा सोगानी ने बताया कि विश्व में सुख, शांति, समृद्धि एवं आरोग्यता की कामना तथा स्वर्गीय डॉ. शीला जैन, विमला देवी छाबड़ा ''मोती संस'' एवं भंवर देवी बेलेवाला की स्मृति में दीप महाअर्चना का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान आदिनाथ के चित्र के समक्ष समाजसेविका निशि कासलीवाल एवं अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। प्रसिद्ध गायकों ने भक्तिमय प्रस्तुतियां दीं तथा मंत्रोच्चार का वाचन किया। अतिथियों एवं समिति की सदस्याओं ने हाथों में जैन धर्म की ध्वजा एवं दीपक लेकर भक्तिभाव से नृत्य करते हुए मंत्रोच्चार के साथ मुख्य मंडल पर दीपक चढ़ाए। इस दौरान भजनों की प्रस्तुतियों पर सदस्याएं झूमकर प्रभु की भक्ति में लीन हो गईं। इस अवसर पर समिति की ओर से समाजसेविका ऋतु कासलीवाल, उमा दीवान, रेणु राणा, राजेश्वरी पापड़ीवाल, निशि कासलीवाल, नीरु तोतूका, उषा जैन, आशा काला, जैना गंगवाल, मधु ठोलिया, विमला सोनी, विजयलक्ष्मी छाबड़ा, कुसुम संघी, सरोज बूचरा एवं लता सोगानी का समिति अध्यक्ष स्वर्णलता अजमेरा, कार्याध्यक्ष नमिता छाबड़ा, मंत्री पुष्पा सोगानी एवं कोषाध्यक्ष तरुणा संघी के साथ संगीता छाबड़ा, नीरा लुहाड़िया, साधना गोदिका, सुधा शाह, ममता जैन आदि ने माल्यार्पण एवं दुपट्टा ओढ़ाकर स्वागत एवं सम्मान किया। इससे पूर्व विश्व शांति प्रदायक णमोकार महामंत्र का सामूहिक जाप किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में समिति की सदस्याएं एवं श्रद्धालुगण उपस्थित रहे।

सतरंगी सावन में बिखरे रंग, उमंग और खुशियों के रंग

महिलाओं के रंग-बिरंगे परिधान, आभूषण, फैशन शो, शानदार प्रस्तुतियों और सरप्राइज गिफ्ट्स ने बांधा समां

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन महासमिति महिलांचल राजस्थान द्वारा आयोजित भव्य ''सतरंगी सावन'' समारोह में सावन की रंगीन छटा, महिलाओं के आकर्षक लहरिया परिधान, खूबसूरत आभूषण, उमंग और उत्साह का ऐसा संगम देखने को मिला कि पूरा वातावरण उत्सवमय हो उठा। कार्यक्रम में महिलाओं ने एक से बढ़कर एक रंग-बिरंगे परिधानों में सज-धजकर अपनी खूबसूरती और पारंपरिक संस्कृति का शानदार प्रदर्शन किया। अध्यक्ष श्रीमती शकुंतला बिंदायका, मंत्री श्रीमती सुनीता गंगवाल एवं कोषाध्यक्ष श्रीमती उर्मिला जैन के कुशल नेतृत्व, अथक परिश्रम, समर्पण एवं शानदार टीमवर्क से यह आयोजन भव्य एवं यादगार बन सका। तीनों पदाधिकारियों ने पूरी टीम को साथ लेकर कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके मार्गदर्शन में महिलाओं की प्रतिभा, रचनात्मकता और उत्साह को शानदार मंच मिला। इस अवसर पर दिगंबर जैन महासमिति राजस्थान अंचल के अध्यक्ष अनिल जैन, आईपीएस एवं महामंत्री महावीर बाकलीवाल का मार्गदर्शन एवं सहयोग भी आयोजन की सफलता में प्रेरणास्रोत रहा। उनके स्नेह, सहयोग एवं मार्गदर्शन ने कार्यक्रम को गरिमामय एवं सशक्त स्वरूप प्रदान किया। कार्यक्रम में 'सतरंगी सावन क्वीन' एवं 'बेस्ट लहरिया ड्रेस' प्रतियोगिता विशेष आकर्षण का केंद्र रही। फैशन शो के माध्यम से प्रतिभागियों के परिधान, व्यक्तित्व, आत्मविश्वास, प्रस्तुति एवं मंचीय अंदाज के आधार पर विजेताओं का चयन किया गया। प्रतियोगिता में मोजमाबाद की सरिता जैन ने प्रथम, श्रीजी नगर की मुस्कान जैन ने द्वितीय तथा सीजी नगर की मीनू गोधा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम में ''सावन डांस धमाल'', ''टैलेंट धमाल'', शानदार हाउजी, लकी ड्रॉ एवं सरप्राइज गिफ्ट्स ने खूब तालियां बटोरीं। हाउजी का संचालन त्रिवेणी नगर इकाई की श्रीमती वंदना जैन एवं श्रीमती बबीता जैन ने किया। विजेताओं को आकर्षक सरप्राइज गिफ्ट्स देकर समारोह की खुशियों को और बढ़ाया गया। स्वादिष्ट भोजन ने भी सभी का मन मोह लिया। समारोह में श्रीमती सीमा एवं श्री राजीव जैन, गाजियाबाद ने दीप प्रज्वलन किया। मुख्य अतिथि श्रीमती शशि सोगाणी रहीं। पुरस्कार वितरण श्रीमती अर्चना जैन एवं श्रीमती मीनाक्षी जैन ने किया। समारोह शिरोमणि श्रीमती आशा रानी काला की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम में श्रीमती ऋतु कासलीवाल की भी गौरवमयी उपस्थिति रही। इसके साथ ही ''शाबाश इंडिया'' के संपादक राकेश गोदिका, श्रीमती

समता गोदिका, राजस्थान जैन सभा के महामंत्री मनीष रचना वेद, सम्यक ग्रुप के संस्थापक अध्यक्ष महावीर बिंदायका, दिगंबर जैन महासमिति के उपाध्यक्ष राजेश सीमा बड़जात्या, पश्चिम संभाग अध्यक्ष निर्मल सरला संघी, मालवीय नगर संभाग अध्यक्ष अजीत बड़जात्या, महेंद्र छाबड़ा, राजेंद्र पापड़ीवाला, बापूनगर से संजय पाटनी, सुरेंद्र मोदी एवं झिलाई इकाई की अध्यक्ष श्रीमती प्रिया जैन सहित अनेक गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति रही। निवाई से पधारी अध्यक्ष श्रीमती शशि, महावीर पारस महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती मधु हाड़ा, कल्याण नगर इकाई अध्यक्ष श्रीमती अंजलि जैन एवं श्रीमती प्रज्ञा जैन की उपस्थिति ने भी कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई। मोजमाबाद, श्रीजी नगर एवं त्रिवेणी नगर इकाइयों ने पूरे जोश, उत्साह और उमंग के साथ कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। महिला अंचल अध्यक्ष शकुंतला बिंदायका ने बताया कि कार्यक्रम का प्रभावी एवं आकर्षक मंच संचालन दिगंबर जैन महासमिति महिलांचल राजस्थान की सचिव श्रीमती सुनीता गंगवाल ने किया। उनके जोशीले, सहज एवं प्रभावशाली अंदाज ने पूरे कार्यक्रम को जीवंत बनाए रखा। उन्होंने शानदार एंकरिंग के माध्यम से अतिथियों एवं उपस्थित महिलाओं को लगातार जोड़े रखा, जिसकी सभी ने मुक्तकंठ से सराहना की। कोषाध्यक्ष उर्मिला जैन ने बताया कि कार्यक्रम की सफलता एवं व्यवस्थाओं को सुचारु रूप से संभालने में श्रीमती शीला जैन, श्रीमती मधु पांड्या, श्रीमती अनीता जैन, श्रीमती अर्चना जैन, श्रीमती मीना चांदवाड़, श्रीमती स्नेहलता, श्रीमती अलका जैन, श्रीमती सुनीता भोंच, श्रीमती पूनम जैन, श्रीमती बीना शाह सहित पूरी टीम का महत्वपूर्ण सहयोग रहा। संपूर्ण आयोजन महिलाओं की प्रतिभा, सृजनात्मकता, सौंदर्य, संस्कृति, आत्मविश्वास एवं आपसी स्नेह का अद्भुत उत्सव बन गया। सावन के रंगों के साथ हंसी-खुशी और मनोरंजन से भरपूर इस आयोजन ने उपस्थित सभी लोगों की यादों में एक खूबसूरत छाप छोड़ी। 'सतरंगी सावन' ने सचमुच सावन के रंगों को खुशियों, उमंग और आपसी सौहार्द के रंग में रंग दिया।

जलरंगों में उतरी गोवा की रवानी और चित्तौड़ की शौर्यगाथा

बागोर की हवेली में जलरंग कला प्रदर्शनी शुरू

उदयपुर. शाबाश इंडिया

इतिहास की सांसें समेटे बागोर की हवेली मंगलवार को रंग, रेखा और संवेदना के अनूठे संसार की साक्षी बनी। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर की कला वीथी में जलरंग माध्यम से सृजित चित्रों की विशेष प्रदर्शनी का शुभारंभ केन्द्र निदेशक डॉ. अश्विन एम. दलवी ने दीप प्रज्वलित कर किया। प्रदर्शनी में एक ही छत के नीचे गोवा की समुद्री जीवंतता और चित्तौड़गढ़ की गौरवशाली ऐतिहासिक चेतना को कलात्मक संवाद में पिरोया गया है। इस अवसर पर डॉ. दलवी ने बताया कि प्रदर्शनी में गोवा एवं चित्तौड़गढ़ में आयोजित कला शिविरों के दौरान कलाकारों द्वारा जलरंगों में सृजित चुनिंदा कृतियों को प्रदर्शित किया गया है। इन चित्रों में रंग केवल दृश्य नहीं रचते, बल्कि स्थान, समय और संस्कृति की अनुभूतियों को भी जीवंत करते हैं। गोवा पर आधारित चित्रों में समुद्र तटों की खुली हवा, ऐतिहासिक गिरजाघरों की स्थापत्य गरिमा, संकरी और जीवंत गलियों की चहल-पहल तथा प्रकृति की हरित लय सहज ही आकर्षित करती है। वहीं, चित्तौड़गढ़ की कृतियों में दुर्ग की विराटता, राजप्रासादों की भव्यता, मंदिरों की आध्यात्मिक आभा और वीरभूमि के इतिहास से उपजी गौरव चेतना प्रभावशाली रूप में उभरती है। जलरंगों की सबसे बड़ी खूबी उनकी पारदर्शिता, कोमलता और प्रकाश के साथ बदलती अभिव्यक्ति है। कलाकारों ने इसी विशेषता को साधते हुए कहीं रंगों को धुंधली स्मृतियों की तरह बहने दिया है, तो कहीं उन्हें स्थापत्य और प्रकृति की दृढ़ पहचान के रूप में उकेरा है। यह प्रदर्शनी केवल चित्रों के अवलोकन का अवसर नहीं, बल्कि दो अलग-अलग सांस्कृतिक भूगोलों की आत्मा से साक्षात्कार का अनुभव भी कराती है। बागोर की हवेली की कला वीथी में सजी यह कलायात्रा दर्शकों को रंगों के माध्यम से विरासत, प्रकृति और इतिहास को नए भावबोध के साथ देखने के लिए आमंत्रित करती है। आमजन इस प्रदर्शनी का निःशुल्क अवलोकन कर सकते हैं। शुभारंभ के अवसर पर केन्द्र के कई अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

रिपोर्टः राकेश शर्मा ''राजदीप''

दो महीनों में पांच बड़े सम्मान, डॉ. गौरव पाईवाल की 19 वर्षों की सेवाओं को मिली नई पहचान

लगातार मिले ये सम्मान डॉ. पाईवाल के लिए केवल व्यक्तिगत उपलब्धियां नहीं हैं, बल्कि फिजियोथेरेपी एवं पुनर्वास चिकित्सा के प्रति बढ़ते विश्वास का भी संकेत हैं। उनकी 19 वर्षों की सेवा यात्रा यह दर्शाती है कि निरंतर अभ्यास, बहुआयामी अध्ययन एवं मरीज-केंद्रित उपचार पद्धति किसी विशेषज्ञ की पहचान को स्थानीय दायरे से राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच तक पहुंचा सकती है।

उदयपुर. शाबाश इंडिया

दर्द से जूझ रहे मरीजों को बिना सर्जरी राहत देने की दिशा में करीब दो दशक से सक्रिय डॉ. गौरव पाईवाल की सेवाओं को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंचों पर लगातार पहचान मिल रही है। रीढ़, गर्दन, घुटनों तथा मस्क्युलोस्केलेटल समस्याओं के उपचार एवं पुनर्वास के क्षेत्र में 19 वर्षों से कार्यरत डॉ. पाईवाल को महज दो महीनों के भीतर पांच प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजा गया है। न्यू केशव नगर स्थित डॉ. पाईवाल फिजियोथेरेपी एंड डायबिटिक फुट केयर क्लिनिक में सेवाएं दे रहे डॉ. पाईवाल ने वर्ष 2007 से अब तक हजारों मरीजों को गैर-शल्य चिकित्सा आधारित फिजियोथेरेपी एवं पुनर्वास सेवाएं प्रदान की हैं। उनकी शैक्षणिक यात्रा भी उल्लेखनीय रही है। उन्होंने कानून, प्रबंधन एवं फिजियोथेरेपी जैसे तीन अलग-अलग व्यावसायिक क्षेत्रों में स्नातक शिक्षा प्राप्त की है। हाल के महीनों में उनकी उपलब्धियों की श्रृंखला विशेष रूप से उल्लेखनीय रही। अंतरराष्ट्रीय फिजियोथेरेपी जर्नल ''फिजियो टाइम्स'' ने उन्हें ''इंटरनेशनल आइकॉन्स ऑफ फिजियोथेरेपी'' सम्मान से सम्मानित किया। जुलाई 2026 में नई दिल्ली में आयोजित समारोह में उन्हें ''इंडियन आइकॉन अवॉर्ड'' प्रदान किया गया। इसके बाद 'द सीईओ इंडिया' मैगजीन ने अगस्त 2026 के प्रिंट संस्करण के कवर पर उन्हें स्थान देते हुए ''ग्लोबल एक्सीलेंस अवॉर्ड 2026'' से सम्मानित किया। इसी क्रम में ''द टाइम्स ऑफ इंडिया'' के ''विकसित भारत-3'' संस्करण में फिजियोथेरेपी के क्षेत्र में उनके योगदान को ''फ्यूचर बीकॉन्स अवॉर्ड'' के माध्यम से रेखांकित किया गया। वहीं, स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त 2026 को उदयपुर के गांधी ग्राउंड में आयोजित जिला स्तरीय समारोह में कैबिनेट मंत्री बाबूलाल खराड़ी एवं जिला कलेक्टर गौरव अग्रवाल ने उन्हें ''राजस्थान सरकार एक्सीलेंस अवॉर्ड 2026'' प्रदान किया। लगातार मिले ये सम्मान डॉ. पाईवाल के लिए केवल व्यक्तिगत उपलब्धियां नहीं हैं, बल्कि फिजियोथेरेपी एवं पुनर्वास चिकित्सा के प्रति बढ़ते विश्वास का भी संकेत हैं। उनकी 19 वर्षों की सेवा यात्रा यह दर्शाती है कि निरंतर अभ्यास, बहुआयामी अध्ययन एवं मरीज-केंद्रित उपचार पद्धति किसी विशेषज्ञ की पहचान को स्थानीय दायरे से राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच तक पहुंचा सकती है।

रिपोर्टः राकेश शर्मा ''राजदीप''

देशभक्त बनना, कभी आत्महत्या मत करना और सदा माता-पिता का सम्मान करना : आचार्य पुलकसागर

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

जिंदगी में डॉक्टर, इंजीनियर, सीए, अधिकारी आदि कुछ भी बन सको या नहीं बन सको, लेकिन एक सच्चे और अच्छे इंसान जरूर बनना। कुछ भी बन गए, लेकिन इंसानियत के गुण नहीं आए तो सब बेकार हो जाएगा। अक्षर की पढ़ाई से जिंदगी महान नहीं बनती, बल्कि जिंदगी की पढ़ाई में अव्वल आने का लक्ष्य रखना चाहिए। जिंदगी कागजों में नहीं, इंसानियत में अच्छे नंबर लाने का नाम है। जिंदगी की वास्तविक पढ़ाई इंसानियत और मानवीयता है। बच्चे अपने शिक्षकों का सम्मान करें और शिक्षक बच्चों को किताबी ज्ञान के साथ जिंदगी का ज्ञान भी प्रदान करें। ये विचार भीलवाड़ा में पहली बार चातुर्मास कर रहे राष्ट्र संत मनोज्ञाचार्य पुलकसागर महाराज ने श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर ट्रस्ट, मेन सेक्टर, शास्त्रीनगर के तत्वावधान में सकल दिगंबर जैन समाज की ओर से चित्रकूटधाम में आयोजित ज्ञान गंगा महोत्सव के तहत मंगलवार को विद्यार्थी जीवन पर केंद्रित प्रवचन में व्यक्त किए। इस दौरान भीलवाड़ा के विभिन्न विद्यालयों के प्राथमिक से उच्च माध्यमिक स्तर तक के हजारों विद्यार्थी उपस्थित रहे। आचार्यश्री ने प्रवचन के अंत में विद्यार्थियों से हाथ खड़े करवाकर संकल्प कराया कि कैसी भी परिस्थिति आए, वे कभी आतंकवादी या देशद्रोही नहीं बनेंगे और राष्ट्र से गद्दारी नहीं करेंगे। उन्होंने विद्यार्थियों को संकल्प दिलाया कि जीवन में कितनी भी असफलताएं आएं, लेकिन वे कभी आत्महत्या नहीं करेंगे और जीवनभर अपने माता-पिता का सम्मान करेंगे। उन्होंने कहा कि जिंदगी बेहद अनमोल है। परीक्षा में कभी कम नंबर आएं तो तनाव में आकर निराश या हताश नहीं होना चाहिए। एक असफलता हजार सफलताओं के द्वार खोल सकती है। उन्होंने विद्यार्थियों को आत्महत्या जैसे कदम से दूर रहने की प्रेरणा देते हुए कहा कि यह जिंदगी दोबारा नहीं मिलने वाली। आत्महत्या के अंधे कुएं में कभी छलांग नहीं लगानी चाहिए, क्योंकि इसका दर्द केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि पूरा परिवार झेलता है। आचार्य पुलकसागर महाराज ने कहा कि व्यक्ति की कीमत डिग्री से नहीं, बल्कि उसके गुणों से होती है। जिंदगी में बीता हुआ समय कभी लौटकर नहीं आता। इसलिए पढ़ाई के लिए मिले 10-12 वर्षों का सदुपयोग करना चाहिए। यदि इस समय मन लगाकर पढ़ाई कर ली तो आगे जीवन में उसका लाभ मिलेगा, लेकिन पढ़ाई का समय मौज-मस्ती में गंवा दिया तो भविष्य में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। उन्होंने माता-पिता का सदैव सम्मान करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि गई हुई दौलत और शोहरत वापस आ सकती है, लेकिन माता-पिता चले गए तो वे कभी लौटकर नहीं आते।

नि:शुल्क मिर्गी रोग शिविर में 144 रोगी हुए लाभान्वित

गुलाबपुरा (रोहित जैन). शाबाश इंडिया

श्री प्राज्ञ मिर्गी रोग निवारक समिति, गुलाबपुरा द्वारा माह के चौथे मंगलवार को आयोजित निःशुल्क मिर्गी रोग जांच एवं उपचार शिविर 25 अगस्त 2026, मंगलवार को संस्था परिसर में लगाया गया। संस्था के मंत्री पदम चंद खटोड़ ने बताया कि शिविर में जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी कॉलेज एवं हॉस्पिटल, जयपुर के वरिष्ठ न्यूरो फिजिशियन डॉ. आर.के. सुरेखा एवं उनकी टीम ने अपनी सेवाएं प्रदान कीं। शिविर में कुल 144 मरीजों का उपचार एवं परामर्श किया गया, जिनमें 26 नए मरीज शामिल थे। सभी मरीजों को निःशुल्क दवाइयां भी वितरित की गईं। शिविर के लाभार्थियों में पुखराज, अजीत कुमार, राहुल कुमार, शोभित एवं गर्वित बुरड़, विजयनगर एवं भीलवाड़ा तथा शिवनदास एवं धर्मदास वासवानी, अजमेर सहित अन्य मरीज शामिल रहे। शिविर में अनिल चौधरी ने मरीजों को मिर्गी रोग से बचाव एवं योग के संबंध में विस्तार से जानकारी दी तथा नियमित रूप से योग करने के लिए प्रेरित किया। संस्था के मंत्री पदम चंद जैन ने संस्था की गतिविधियों की जानकारी दी। अध्यक्ष घेवर चंद श्रीश्रीमाल ने स्वागत एवं अभिनंदन किया, जबकि कोषाध्यक्ष राजेंद्र चोरड़िया ने आभार व्यक्त किया। पुष्पा बुरड़ ने सभी मरीजों के शीघ्र स्वस्थ होने की शुभकामनाएं दीं। शिविर में मरीजों एवं उनके परिजनों के लिए पूरे अगस्त माह निःशुल्क भोजन सेवा की व्यवस्था भी की गई। इस सेवा का लाभ दुलेसिंह, नरेंद्र कुमार, निर्मल कुमार एवं अनिल कुमार पगारिया, जोजवा द्वारा प्रदान किया गया। इस सेवा से 280 से अधिक व्यक्ति लाभान्वित हुए। शिविर के आयोजन में लाभार्थी परिवार की ओर से पुष्पा बुरड़, आशा बुरड़ एवं रितु कोठारी सहित संस्था से देवकरण कोठारी, मदन लाल लोढ़ा, मदन लाल रांका, सुरेश लोढ़ा, सुशील चौधरी, शांतिलाल डांगी, विनीत डांगी, दिनेश जोशी, ज्ञान बाबेल, मनोज कुमार सोमानी, दिलीप पाराशर, कमल कावड़िया, राजेंद्र जायसवाल, रामकृष्ण त्रिपाठी, दिलीप विश्वकर्मा, स्नेहलता डांगी, अनीता रांका एवं पूजा कोठारी सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने सेवाएं प्रदान कीं। शिविर का संचालन अनिल चौधरी ने किया।

बाल चित्रकारों की एक दिवसीय कला प्रदर्शनी की हुई सराहना

जयपुर. शाबाश इंडिया

जवाहर कला केंद्र में राजा रामदेव पोद्दार राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गांधीनगर, जयपुर के कला विभाग की ओर से विद्यार्थियों द्वारा तैयार की गई 100 से अधिक पेंटिंग्स की एक दिवसीय प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी का उद्घाटन नोएटिक कंपनी, नोएडा के प्रबंध निदेशक राजीव त्यागी ने किया। इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार फारूक आफरीदी सहित अनेक कला प्रेमी उपस्थित रहे। प्रधानाचार्य लक्ष्मीनारायण झा एवं चित्रकला व्याख्याता ज्योति जैन ने बताया कि बाल चित्रकारों को प्रोत्साहित करने और उन्हें अपनी प्रतिभा पहचानने के लिए यह पहला प्रयास है। यह प्रसन्नता का विषय है कि प्रदर्शनी के दौरान करीब 10 पेंटिंग्स कला प्रेमियों ने मौके पर ही खरीद लीं। प्रदर्शनी में करीब 1,000 दर्शकों ने कला कृतियों का अवलोकन किया और युवा चित्रकारों मुस्कान, बादल, अरमान आफरीदी, प्रियांशी, मंशिका सहित अन्य विद्यार्थियों की कला प्रतिभा की सराहना की।

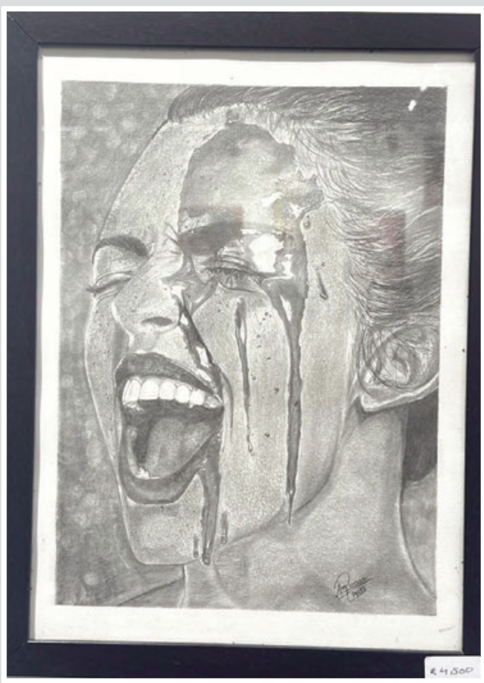

क्रिया बड़ी होने से धर्म बड़ा नहीं होता, भाव बड़ा होना चाहिए : युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी

तिलक, तप और दिखावा नहीं; भीतर कितना बदला, यही धर्म की असली रिपोर्ट

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

घंटी बजाने भर से धर्म हो जाता तो हाथी के गले की घंटी उसे मुक्त कर देती और केवल स्नान से मुक्ति मिलती तो मछली सबसे पहले मुक्त होती। धर्म केवल बाहरी क्रियाओं का नाम नहीं है। क्रिया शरीर है और भाव उसका प्राण। प्राण निकल जाए तो शरीर रह जाता है, जीवन नहीं। यह उद्बोधन श्रमणसंघीय युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी ने शांतिभवन में आयोजित विशाल धर्मसभा में श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए दिया। युवाचार्यश्री ने ''मंगलं भगवान वीरो'' की व्याख्या करते हुए दान, शील, तप एवं भाव धर्म की चर्चा की। उन्होंने कहा कि गौतम स्वामी से दान, स्थूलिभद्र से शील और भगवान महावीर से तप की प्रेरणा मिलती है, लेकिन इन सभी के पीछे भावों की निर्मलता अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि दुनिया क्रिया गिनती है, जबकि कर्म भाव को गिनते हैं। बाहर कोई कितना धार्मिक दिखाई देता है, यह धर्म की अंतिम कसौटी नहीं है। आज फोटो का जमाना है। हर व्यक्ति चाहता है कि उसकी तस्वीर आए, छपे और वायरल हो, लेकिन बीमारी फोटो देखकर नहीं पकड़ी जाती। डॉक्टर को एक्स-रे, सीटी स्कैन और एमआरआई की जरूरत पड़ती है। उसी प्रकार धर्म में भी चेहरा नहीं, भीतर का ''स्कैन'' करना जरूरी है। युवाचार्यश्री ने कहा कि दुकान में बहुत माल पड़ा हो, लेकिन बाजार में उसका भाव न हो तो वह माल मूल्यहीन हो जाता है। थोड़ा माल हो और भाव अच्छा हो तो वही व्यक्ति को मालामाल कर देता है। साधना में भी मात्रा से अधिक भाव की कीमत है। क्रिया बड़ी हो और भाव छोटा हो तो धर्म का लाभ भी छोटा रह जाता है। स्थानांग सूत्र में वर्णित चार प्रकार के भावों को समझाते हुए उन्होंने कहा कि कुछ भाव कीचड़ मिले पानी जैसे होते हैं, जिनमें मैल इतना गहरा होता है कि उसे अलग करना कठिन हो जाता है। कुछ भाव प्रदूषित पानी जैसे होते हैं, जिन्हें प्रयास से साफ किया जा सकता है। कुछ रेती मिले पानी जैसे होते हैं, जिनकी मलिनता थोड़ी देर टिकती है। जबकि निर्मल भाव पर्वत की चट्टान पर बहते पानी की तरह होते हैं—पानी आया और चला गया, चट्टान ने उसे पकड़कर नहीं रखा। उन्होंने कहा कि मनुष्य को अपने भीतर भी यही देखना चाहिए। किसी को धन मिलता देखकर मन जलता है, किसी के लाभ पर यह विचार आता है कि ''मैं होता तो सब ले लेता'' या किसी के नुकसान में आनंद आता है तो यह भीतर का कीचड़ है। दूसरे का धन हमारे घर नहीं आता, लेकिन उसे देखकर उठी ईर्ष्या हमारे कर्मों को जरूर बढ़ा देती है।

आयोजन बड़ा हो गया, उद्देश्य छोटा हो गया

युवाचार्यश्री ने आधुनिक जीवन की देखादेखी पर कटाक्ष करते हुए कहा कि आज बहुत से काम आवश्यकता से नहीं, तुलना से किए जा रहे हैं। ''उसने किया तो मैं भी करूंगा, उसके यहां इतना था तो मेरे यहां उससे अधिक होना चाहिए''—यह प्रवृत्ति लगातार बढ़ रही है। विवाह और पारिवारिक आयोजनों में प्रयोजन पीछे छूट रहा है और प्रदर्शन आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि आयोजन बड़ा हो गया, उद्देश्य छोटा हो गया। सजावट, मेकअप, प्री-वेडिंग शूट और दिखावे में इतनी ऊर्जा लग जाती है कि जिस संबंध के लिए आयोजन किया जा रहा है, वही पीछे रह जाता है। नई चीज गलत नहीं है, लेकिन उसका अर्थ जाने

बिना केवल इसलिए करना कि दुनिया कर रही है, यह विवेक नहीं, बल्कि देखादेखी है। खरीदारी की बढ़ती आदत पर उन्होंने कहा कि आज कई लोग जरूरत से नहीं, ऑफर देखकर सामान खरीदते हैं। ''फ्री है, कभी काम आएगा'' कहकर घर भरते जाते हैं और दिवाली की सफाई में वही सामान कबाड़ बनकर बाहर निकल जाता है। हम पैसा देकर कबाड़ घर लाते हैं और कबाड़ वाला वही कबाड़ लेकर पैसा कमाता है। युवाचार्यश्री ने बच्चों के भोजन का उदाहरण देते हुए कहा कि मोबाइल देखते हुए दो रोटी खा लेने से केवल पेट भरता है। भोजन जब रस बनता है, तभी शरीर का हिस्सा बनता है। धर्म में भी यही नियम है। प्रवचन कान में गया और भाव में नहीं उतरा तो वह भी टिफिन में रखा भोजन है—साथ है, लेकिन जीवन का हिस्सा नहीं बना। जंक फूड और डिजिटल सामग्री का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि जिस भोजन में पोषण नहीं होता, वह शरीर को भरता है, बनाता नहीं। उसी प्रकार मोबाइल, ओटीटी और निरर्थक सामग्री मन को भरती रहती है, लेकिन भीतर का विकास नहीं करती। पेट का जंक शरीर बिगाड़ता है, जबकि दिमाग का जंक दृष्टि बिगाड़ देता है। युवाचार्यश्री ने कहा कि धर्मकार्य भी मरे-मरे मन से नहीं होना चाहिए। किसी ने कहा इसलिए कर लिया, समाज कर रहा है इसलिए कर लिया—यह क्रिया हो सकती है, साधना नहीं। जहां आनंद नहीं, वहां क्रिया पूरी हो सकती है, लेकिन भाव नहीं जागते। उन्होंने श्रद्धालुओं से कहा कि रोज अपने भीतर की जांच करें। क्रोध कितना घटा, मान कितना कम हुआ, माया कितनी छूटी और लोभ कितना घटा—यही धर्म की असली रिपोर्ट है। चेहरे पर तिलक देखकर दुनिया प्रभावित हो सकती है, कर्म नहीं। कर्म तो भीतर की नीयत पढ़ते हैं। युवाचार्यश्री ने कहा कि जितने भाव कलुषित होंगे, कर्मबंध उतना ही गाढ़ा होगा और जितने भाव निर्मल होंगे, कर्मबंध उतना ही शिथिल होता जाएगा। इसलिए साधना केवल क्रिया करने की नहीं, बल्कि भीतर को साफ करने की प्रक्रिया बने। क्रिया दिखाई देती है, भाव दिखाई नहीं देते, लेकिन जीवन को बदलने की ताकत उसी अदृश्य भाव में होती है। साध्वी नाव्याश्रीजी ने कहा कि धर्म करने के बाद पछताना नहीं चाहिए, बल्कि उसका आनंद और अनुमोदना करनी चाहिए। धर्म के बाद प्रसन्नता शुभ भावों को

पुष्ट करती है, जबकि पाप के बाद पश्चाताप अशुभ से लौटने की दिशा देता है। इसलिए धर्म के बाद आनंद और पाप के बाद पश्चाताप—यही भाव कर्मों की तीव्रता को हल्का या गाढ़ा करते हैं। इस अवसर पर बड़ी संख्या में तपस्वी आराधक भाई-बहनों ने 2, 3, 5 एवं 9 उपवास की तपस्या की। वहीं सिद्धितप की छठी लड़ी के अंतर्गत सामूहिक रूप से 165 तपस्वियों ने आयंबिल एवं उपवास के प्रत्याख्यान युवाचार्यश्री से ग्रहण किए। शांतिभवन आनंद अनुभूति वर्षावास के संरक्षक नवरतनमल बंब एवं अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद चीपड़ ने बताया कि धर्मसभा में देश के विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में पहुंचे गुरुभक्तों ने युवाचार्यश्री के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। इस दौरान मरुधर केसरी पावनधाम, जैतारण के कार्याध्यक्ष नरेश बोहरा, महामंत्री महावीर भंडारी, अशोक कोठारी, महावीर गादिया, रतनचंद मूथा, ज्ञानचंद हिरण एवं प्रकाशचंद चौरड़िया सहित पदाधिकारियों ने आगामी 21 जनवरी 2027 को मरुधर केसरी श्री मिश्रीमलजी महाराज के पुण्य स्मृति दिवस के अवसर पर पावनधाम, जैतारण पधारने के लिए युवाचार्यश्री से विनती की।

प्रवक्ता : सुनील चपलोत
मोबाइल : 9414730514

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बेहनाड़ी में सदन एवं क्लब पदाधिकारियों के लिए मतदान सम्पन्न

जोधपुर. शाबाश इंडिया। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बेहनाड़ी, तिंवरी में इको क्लब, यूथ क्लब एवं इनोवेशन क्लब के पदाधिकारियों तथा पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश एवं वायु सदनों के कप्तान-उपकप्तान के चयन के लिए लोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत मतदान सम्पन्न हुआ। आयोजन में 230 से अधिक विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। निर्वाचन साक्षरता क्लब के विद्यार्थियों ने मतदान प्रक्रिया को जिम्मेदारीपूर्वक संचालित किया। निर्वाचन में पृथ्वी सदन की कप्तान शोभा एवं उपकप्तान दुर्गा, जल सदन के कप्तान संगीता एवं उपकप्तान नरेश, अग्नि सदन की कप्तान रेखा एवं उपकप्तान जीतू, आकाश सदन की कप्तान किरण एवं उपकप्तान हरखाराम तथा वायु सदन की कप्तान सरोज एवं उपकप्तान सुमन चुने गए। इको क्लब की अध्यक्ष गीता व सचिव सवाई, यूथ क्लब के अध्यक्ष श्रवण व सचिव इंदिरा तथा आईटी इनोवेशन क्लब के अध्यक्ष प्रवीण व सचिव मंजू चुने गए। प्रधानाचार्य कविता गुप्ता एवं निर्वाचन साक्षरता क्लब प्रभारी फरसाराम के मार्गदर्शन में आयोजित कार्यक्रम में भारती एयरटेल फाउंडेशन का विशेष सहयोग रहा। आयोजन से विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक मूल्यों एवं नेतृत्व क्षमता का विकास हुआ।

नेत्र चिकित्सा शिविर में पंचम नि:शुल्क लेंस प्रत्यारोपण ऑपरेशन शिविर

18 मरीजों का नि:शुल्क लेंस प्रत्यारोपण, सभी को काले चश्मे वितरित

निवाई. शाबाश इंडिया। लायंस क्लब निवाई द्वारा जिला अंधता नियंत्रण समिति, टोंक के सहयोग से राजकीय चिकित्सालय, निवाई में 24 एवं 25 अगस्त को पंचम नि:शुल्क लेंस प्रत्यारोपण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 134 मरीजों की नेत्र जांच की गई, जिनमें से 20 मरीजों को ऑपरेशन के लिए भर्ती किया गया। मीडिया प्रभारी विमल जौंला ने बताया कि नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. ममता बिजराणियां ने मंगलवार, 25 अगस्त को 18 मरीजों का सफल लेंस प्रत्यारोपण किया। ऑपरेशन के बाद सभी मरीजों को आंखों की सुरक्षा के लिए काले चश्मे वितरित किए गए। शिविर में आने वाले मरीजों एवं उनके परिजनों के लिए लायंस क्लब निवाई की ओर से चाय, नाश्ता एवं अल्पाहार की व्यवस्था भी की गई। शिविर में लायंस क्लब अध्यक्ष हुकमचंद जैन, उपाध्यक्ष महेंद्र कुमार जैन, लायन प्रेम देवी, लायन उषा जैन, सचिव मुकेश विजय एवं राजकीय चिकित्सालय के प्रभारी डॉ. विजय कुमार, हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. अरुण कुमार, होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. लेखराज चौधरी सहित चिकित्सकों एवं नर्सिंग स्टाफ ने सहयोग किया। अस्पताल प्रभारी डॉ. विजय कुमार ने सफल ऑपरेशन के लिए सभी मरीजों को शुभकामनाएं दीं। लायंस क्लब अध्यक्ष हुकमचंद जैन ने मरीजों को आंखों की सुरक्षा एवं दवाइयों के सेवन संबंधी आवश्यक जानकारी दी। शिविर का लाभ डांगरथल, चिकाना, पराणा, वनस्थली, सिरोही एवं महाराजपुरा सहित आसपास के गांवों के लोगों ने उठाया। आयोजन को सफल बनाने में चिकित्सकों, नर्सिंग स्टाफ एवं लायंस क्लब के सदस्यों का सहयोग रहा।

भाग्य भरोसे न बैठकर, सम्यक पुरुषार्थ की ओर बढ़ने का उपाय है: जैन ज्योतिष

देहरा-तिजारा अतिशय क्षेत्र में हुआ अखिल भारतीय जैन ज्योतिषाचार्य परिषद का 9वां राष्ट्रीय अधिवेशन

देहरा-तिजारा. शाबाश इंडिया

देहरा-तिजारा अतिशय क्षेत्र में चातुर्मासरत परम पूज्य भावलिंगी संत, अध्यात्मविद् दिगंबराचार्य श्री 108 विमर्शसागरजी महामुनिराज के ससंघ सान्निध्य में अखिल भारतीय जैन ज्योतिषाचार्य परिषद का 9वां राष्ट्रीय अधिवेशन श्रद्धा एवं उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। मंदिर अध्यक्ष मुकेश जैन एवं प्रचार मंत्री उमंग जैन ने बताया कि अधिवेशन के अवसर पर देशभर से आए जैन ज्योतिषाचार्यों एवं परिषद के सदस्यों ने आचार्यश्री के चरणों में उपस्थित होकर भाव-विनयांजलि अर्पित की तथा ज्योतिष विद्या से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श किया। देहरा अतिशय क्षेत्र में चातुर्मास कर रहे आचार्यश्री विमर्शसागरजी महामुनिराज के दर्शन एवं मंगल आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े गणमान्यजन पहुंच रहे हैं। इसी क्रम में मंगलवार सुबह जैन ज्योतिषाचार्यों का वृहद संगठन आचार्यश्री के सान्निध्य में पहुंचा।

समाज को मिथ्याभ्रम से निकालकर जिनेन्द्र भक्ति से जोड़ना उद्देश्य

परिषद के संस्थापक एवं अध्यक्ष रवि जैन ''गुरुजी'' ने अधिवेशन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वर्ष 2020 में ज्योतिषाचार्यों ने मिलकर परिषद का गठन किया था। परिषद का मुख्य उद्देश्य जैन समाज को मिथ्याभ्रम से निकालकर जिनेन्द्र भगवान की आराधना एवं धर्म से जोड़ना है। संगठन के माध्यम से इस दिशा में निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं और इसमें काफी सफलता भी प्राप्त हुई है। उन्होंने कहा कि आचार्य गुरुवर के सान्निध्य में परिषद का 9वां अधिवेशन सम्पन्न होना सभी ज्योतिषाचार्यों के लिए गौरव का विषय है। गुरु आशीर्वाद से परिषद अपने उद्देश्यों को और अधिक मजबूती के साथ आगे बढ़ाएगी।

ज्योतिष को भय का माध्यम नहीं, पुरुषार्थ का मार्ग बनाएं

आचार्य श्री 108 विमर्शसागरजी महामुनिराज ने परिषद के सदस्यों को मार्गदर्शन देते हुए कहा कि प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव स्वामी ने अपने पुत्र चक्रवर्ती भरत आदि के लिए ज्योतिष, गणित आदि विद्याओं का ज्ञान प्रदान किया था। जैन ज्योतिष समयज्ञान का एक अंग है, जिसका उद्देश्य व्यक्ति को सही दिशा में पुरुषार्थ के लिए प्रेरित करना होना चाहिए। आचार्यश्री ने कहा कि ज्योतिष के माध्यम से किसी व्यक्ति को भयभीत करने के बजाय उसके भीतर संभलने की भावना एवं आत्मविश्वास जागृत करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपनी दुविधा लेकर आए तो उसे ग्रहों की दशा बताकर डराने के स्थान पर वर्तमान में जिनेन्द्र भक्ति से जुड़ने और अपना पुरुषार्थ श्रेष्ठ बनाने के लिए प्रेरित करना चाहिए। उन्होंने जैन ज्योतिषाचार्यों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि जैन ज्योतिष को विश्व पटल पर पहुंचाने का प्रयास सराहनीय है। भाग्य के भरोसे बैठने के बजाय सम्यक पुरुषार्थ करते हुए धर्म एवं जिनेन्द्र भक्ति से जुड़ना ही जीवन को सार्थक दिशा प्रदान करता है। इस अवसर पर मंदिर अध्यक्ष मुकेश जैन, महामंत्री नरेंद्र जैन, कोषाध्यक्ष शिंभू जैन, प्रचार मंत्री उमंग जैन, चातुर्मास अध्यक्ष सुरेश जैन, रवि जैन, सोनू जैन, पूर्व अध्यक्ष नरेंद्र जैन, अनिल जैन एवं राकेश जैन सहित परिषद एवं मंदिर समिति से जुड़े पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे। आचार्यश्री के मंगल सान्निध्य एवं आशीर्वाद में सम्पन्न अधिवेशन में जैन ज्योतिष के माध्यम से समाज में धर्म, आस्था, सकारात्मक सोच एवं सम्यक पुरुषार्थ की भावना को बढ़ाने का संकल्प लिया गया।

उदयपुर में ज्ञान-चिंतन का राष्ट्रीय संगम : विद्वत संगोष्ठी का भव्य समापन

मुनि श्री आदित्यसागरजी महाराज के पावन सान्निध्य में 'हितमणिमालिका' एवं 'प्रश्नोत्तर रत्नमालिका' का हुआ सार्थक अनुशीलन

उदयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन आदिनाथ भवन, सेक्टर-11 में 22 एवं 23 अगस्त 2026 को श्रुत संवेगी मुनि श्री आदित्यसागरजी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी का भव्य समापन हुआ। संगोष्ठी के चार सत्रों में ''हितमणिमालिका' एवं 'प्रश्नोत्तर रत्नमालिका' पर गहन शास्त्रीय विमर्श किया गया। चारों सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः प्रो. प्रेमसुमन जैन, उदयपुर, पं. विनोद जैन रजवांस, डॉ. श्रेयांस जैन बड़ौत एवं डॉ. श्रेयांस जैन ने की। सत्रों का संचालन पं. विनोद जैन, डॉ. पंकज जैन, डॉ. सुनील जैन 'संचय' एवं डॉ. बाहुबली जैन, इंदौर ने क्रमशः किया। देशभर से आए विद्वानों ने दोनों ग्रंथों के दार्शनिक, आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक पक्षों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। मुनि श्री आदित्यसागरजी महाराज ने मंगल उद्बोधन में कहा कि शास्त्रों का अध्ययन तभी सार्थक है, जब

उसका प्रभाव जीवन एवं आचरण में दिखाई दे। शास्त्र केवल ज्ञान संग्रह का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मचिंतन, आत्मशुद्धि एवं जीवन-परिष्कार का मार्ग हैं। उन्होंने विद्वानों के शोधपूर्ण अनुशीलन की सराहना करते हुए ऐसे आयोजनों को जैन ज्ञान-परंपरा के संरक्षण एवं नई पीढ़ी तक उसके प्रसार के लिए महत्वपूर्ण बताया। मुनिश्री ने वर्तमान समय की अनेक विसंगतियों पर भी प्रकाश डाला। संगोष्ठी के संयोजक पं. विनोद जैन रजवांस ने सभी विद्वानों, अतिथियों, आयोजन समिति एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मुनिश्री के पावन सान्निध्य और विद्वानों के सारगर्भित चिंतन से यह आयोजन 'ज्ञान-यज्ञ' के रूप में सफल हुआ। आयोजन में निर्देशक डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत, स्थानीय संयोजक डॉ. राजेश जैन देवड़ा, चातुर्मास अध्यक्ष अशोक शाह, आदिनाथ ट्रस्ट अध्यक्ष पारस जैन चित्तौड़ा, महामंत्री भंवरलाल एवं संयोजक महावीर सिंघवी सहित समिति सदस्यों का विशेष सहयोग रहा। संगोष्ठी में प्रो. प्रेमसुमन जैन, डॉ. ज्योतिबाबू जैन, डॉ. आशीष जैन आचार्य, डॉ. पंकज जैन शास्त्री इंदौर, डॉ. सुनील जैन 'संचय' ललितपुर, डॉ. सतेंद्र जैन जयपुर, डॉ. आशीष जैन शास्त्री बम्होरी, डॉ. आशीष जैन शिक्षाचार्य दमोह, डॉ. बाहुबली जैन इंदौर, डॉ. सुमत कुमार जैन उदयपुर एवं पं. अंकित जैन शास्त्री मडदेवरा सहित अनेक विद्वानों की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस अवसर पर अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन शास्त्री परिषद द्वारा प्रकाशित डॉ. सुनील जैन 'संचय' की कृति 'अंतर्मन का आलोक' का विमोचन भी किया गया। दो दिवसीय संगोष्ठी ने जैन साहित्य, दर्शन एवं आध्यात्मिक चिंतन को समर्पित महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मंच के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। **-डॉ. राजेश जैन, उदयपुर**

सच्चा जैनी वह है जिसके घर में जैनत्व के सिद्धांतों का पूर्णतः पालन होता हो : राजेश जैन दद्दू

इंदौर. शाबाश इंडिया

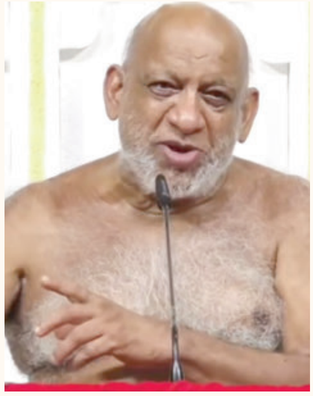

आज हजारों जैन घरों में एक भी घर ऐसा दिखाई नहीं देता, जहां जैनत्व के सिद्धांतों का पूर्णतः पालन होता हो। सच्चा जैनी वही है जिसका घर जिनवाणी में बताए गए सिद्धांतों के अनुरूप हो और घर में रहने वाले लोग भी जैनत्व के संस्कारों से समृद्ध हों। जिस घर में रात्रि भोजन पूर्णतः निषेध हो, जहां परिवार के सदस्य स्वयं भी रात्रि भोजन न करें और मेहमानों को भी न कराएं, वही सच्चा जैन घर और वहां रहने वाला व्यक्ति सच्चा जैनी है। ये खरी-खरी बातें मंगलवार को सकल दिगंबर जैन धर्म प्रभावना समिति के तत्वावधान में विद्यासुधा देशना मंडप में आयोजित धर्मसभा में श्रमण संस्कृति के महाश्रमण मुनि पुंगव सुधासागरजी महाराज ने प्रवचन के दौरान कहीं। धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने बताया कि मुनिश्री ने तंज करते हुए कहा कि जैन होकर भी जिस घर में लोग रात्रि भोजन करते हों, उस मकान पर ''निशाचर भवन'' लिखवा देना चाहिए।

आकांक्षाओं से मुक्ति ही आत्मकल्याण का मार्ग : आचार्यश्री उदारसागर

मुरैना (मनोज जैन नायक). शाबाश इंडिया। नगर में चातुर्मासरत परम पूज्य आचार्य श्री 108 उदारसागर महाराज ने बड़े जैन मंदिर में प्रवचन के दौरान जैन दर्शन के निःकांक्षित अंग की व्याख्या करते हुए कहा कि मनुष्य के जीवन में सबसे बड़ी समस्या बाहर की वस्तुओं की कमी नहीं, बल्कि भीतर बढ़ती हुई आकांक्षाएं हैं। आशा और इच्छाओं का यह सिलसिला ऐसा है कि एक इच्छा पूरी होते ही दूसरी इच्छा जन्म ले लेती है। उन्होंने कहा कि आशारूपी गड्ढा कितना भी भरने का प्रयास किया जाए, वह कभी नहीं भरता। इसलिए मनुष्य को इच्छाओं की पूर्ति में जीवन गंवाने के बजाय इच्छाओं के स्वरूप को समझने का प्रयास करना चाहिए। आचार्यश्री ने कहा कि प्रत्येक संसारी जीव पंचेंद्रिय विषयों के सुख की आकांक्षा रखता है। आंखों को सुंदर दृश्य चाहिए, कानों को मधुर शब्द, नाक को सुगंध, जिह्वा को स्वादिष्ट भोजन और त्वचा को स्पर्श का सुख चाहिए। इन पांचों इंद्रियों की इच्छाओं को पूरा करने में मनुष्य अपना पूरा जीवन लगा देता है, लेकिन इंद्रियों की तृप्ति कभी स्थायी नहीं होती। कुछ समय के लिए सुख की अनुभूति होती है और फिर वही मन किसी नई वस्तु की इच्छा करने लगता है। उन्होंने कहा कि आज मनुष्य सुख-सुविधाओं, धन-संपत्ति, पद और प्रतिष्ठा को ही जीवन की सफलता मान बैठा है। जिसके पास साइकिल है, वह मोटरसाइकिल की इच्छा करता है; मोटरसाइकिल वाला कार चाहता है, कार वाला बड़ी कार चाहता है और बड़ी कार वाला और अधिक वैभव की चाह रखने लगता है। इसी प्रकार पद मिलने पर बड़ा पद, सम्मान मिलने पर और अधिक सम्मान तथा धन मिलने पर और अधिक धन की इच्छा उत्पन्न होती रहती है। प्रश्न यह है कि इच्छाएं पूरी हो रही हैं या इच्छाएं मनुष्य को अपने पीछे दौड़ा रही हैं? आचार्यश्री ने कहा कि संसार का कोई भी भौतिक सुख स्थायी नहीं है। जिस वस्तु को प्राप्त करके आज मनुष्य अत्यंत प्रसन्न हो रहा है, कुछ समय बाद वही वस्तु सामान्य लगने लगती है। जिस उपलब्धि को कभी जीवन की सबसे बड़ी सफलता माना था, उसके बाद मन नई उपलब्धि की तलाश में निकल पड़ता है। यही आकांक्षा का स्वभाव है। इसलिए सुख वस्तुओं में कम और मन की संतुष्टि में अधिक है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि चक्रवर्ती छह खंड का अधिपति होता है। उसके पास अपार धन, वैभव, सत्ता और ऐश्वर्य होता है। उसके आदेश पर असंख्य लोग कार्य करते हैं, लेकिन जब जीवन की अंतिम घड़ी आती है तो इतना बड़ा साम्राज्य भी उसके साथ नहीं जाता।

जैन सोशल ग्रुप महानगर द्वारा धार्मिक यात्रा का भव्य आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। जैन सोशल ग्रुप महानगर, जयपुर द्वारा बिजौलिया पार्श्वनाथ, जहाजपुर एवं आंवा की दो दिवसीय धार्मिक यात्रा का भव्य आयोजन किया गया। यात्रा में 4 बसों के माध्यम से 170 यात्रियों ने विभिन्न धार्मिक स्थलों के दर्शन कर पुण्यार्जन किया। महानगर ग्रुप के अध्यक्ष सुशील कासलीवाल एवं सचिव विनीत जैन ने बताया कि धार्मिक यात्रा का शुभारंभ महावीर नगर स्थित जैन मंदिर में दर्शन एवं पूजन के साथ हुआ। कार्यक्रम संयोजक एवं महानगर ग्रुप के पूर्व अध्यक्ष संजय छाबड़ा ने बताया कि यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं ने विभिन्न धार्मिक स्थलों के दर्शन किए और धार्मिक आयोजनों में सहभागिता कर धर्मलाभ प्राप्त किया। इस अवसर पर महानगर ग्रुप के पूर्व अध्यक्ष प्रदीप जैन, सी.एस. जैन, रवि प्रकाश जैन, वीरेंद्र जैन, राजीव जैन, दीपेश छाबड़ा, संजय छाबड़ा सहित ग्रुप के पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य, यात्रा के पुण्यार्जक एवं सहयोगी उपस्थित रहे। यात्रा के दौरान सभी सदस्यों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की और यात्रा को सफल बनाने में सहयोग प्रदान किया।

सावन री मस्ती महोत्सव का रंगारंग समारोह सम्पन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद, हेरिटेज संभाग, गुलाबी नगरी जयपुर द्वारा प्रदेश संयुक्त महामंत्री विनोद पापड़ीवाल के निर्देशन में ''सावन री मस्ती महोत्सव'' का रंगारंग आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक सुनीता गंगवाल एवं अंजना शाह ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ संस्था के परम संरक्षक विकास तिजारिया, दर्पण बिलाला एवं संजय शाह ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इसके पश्चात ''सावन सुंदरी'' एवं युगल नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में शिल्पा जैन ने ''सावन सुंदरी'' का खिताब प्राप्त किया, जबकि मोनिका जैन ने द्वितीय स्थान हासिल किया। विजेताओं को जैन समाज के प्रमुख समाजसेवी एवं परम गुरुभक्त दीक्षांत हाड़ा ने पुरस्कार प्रदान किए। अध्यक्ष रुपेंद्र जैन ने बताया कि आयोजन के दौरान निहारिका, क्षमा एवं दिव्य जैन की ओर से लकी ड्रॉ के लिए आकर्षक उपहार भी प्रदान किए गए। कार्यक्रम में महिलाओं एवं युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और सावन के गीत-संगीत एवं रंगारंग प्रस्तुतियों का आनंद लिया।

भक्तामर स्तोत्र के 7वें एवं 8वें काव्य की व्याख्या से धर्मसभा हुई भावपूर्ण

किशनगढ़. शाबाश इंडिया। आर.के. कम्युनिटी सेंटर में आचार्य श्री 108 विहर्ष सागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में आयोजित धर्मसभा में भक्तामर स्तोत्र के 7वें एवं 8वें काव्य की भावपूर्ण व्याख्या की गई। इस अवसर पर पूवार्चार्यों के प्रति श्रद्धा एवं विनय प्रकट करते हुए आचार्य श्री 108 वर्धमान सागरजी, आचार्य श्री 108 विराग सागरजी एवं आचार्य श्री 108 विशुद्ध सागरजी के चित्रों का अनावरण किया गया। चित्र अनावरण का सौभाग्य प्रकाशचंद गोधा, इन्द्रचंद पाटनी, कमल बैद, रमेश गंगवाल, पूरण टोंग्या, पवन पाटनी एवं राजू रांवका को मिला। शास्त्र भेंट संघस्थ ब्रह्मचारी भैया एवं कैलाश पाटनी (उरसेवा) सहित सकल जैन समाज की महिलाओं ने किया। पूवार्चार्यों के चरणों में अर्घ्य भी समर्पित किए गए। मंच संचालन बसंत बैद एवं मंगलाचरण रजनी बड़जात्या ने किया। धर्मसभा में बताया गया कि 7वें काव्य में जिनेंद्र भगवान की भक्ति को पाप कर्मों के अंधकार को दूर करने वाला बताया गया है, जबकि 8वें काव्य में आचार्य अपनी अल्प बुद्धि स्वीकार करते हुए भगवान की महिमा से भक्ति के प्रभावशाली होने का भाव व्यक्त करते हैं।